डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' का समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

बी.ए. (विशेष) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम

उपाधि हेतु प्रस्तुत

(परियोजना कार्य)

सत्र : 2018-21

हिंदी एवं हिंदी पत्रकारिता विभाग

श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज

देव नगर, करोल बाग, दिल्ली - 110005

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

शोध निर्देशिका

डॉ० अंजु

शोधार्थी

निखिल पवार

अनुक्रमांक – 907

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार (विशेष)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि निखिल पवार, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार (विशेष) द्वारा लिखित यह परियोजना कार्य **"डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' का समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन"** मेरे निर्देशन में सम्पन्न किया गया है। मैं बी.ए. (विशेष) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम उपाधि हेतु इसकी अनुशंसा करती हूं। जहाँ तक मेरी जानकारी है, इनका यह शोध कार्य मौलिक है।

मैं शोधकर्ता के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूं।

हस्ताक्षर

डॉ० अंजु

शोध निर्देशिका

घोषणा-पत्र

मैं निखिल पवार यह घोषणा करता हूँ कि मैंने **"डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' का समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन"** नामक परियोजना कार्य डॉ० अंजु के निर्देशन में पूर्ण किया है। मेरा यह शोध कार्य, दिल्ली विश्वविद्यालय के बी.ए. (विशेष) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम उपाधि हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है। यह कार्य सर्वथा मौलिक है।

निखिल पवार

शोधार्थी

आभार

मेरी शोध-निर्देशिका आदरणीया **डॉ० अंजु** का मैं हृदय से आभारी हूं। जिन्होंने समय-समय पर आने वाली कठिनाइयों एवं अवरोधों में हतोत्साह होते देखकर न केवल मुझे सदैव प्रोत्साहन दिया है, बल्कि अपने अनुपम मार्गदर्शन से शोध के नए-नए पहलुओं की ओर संकेत कर शोध कार्य को पूर्ण कराने में अमूल्य मार्गदर्शन प्रदान कर इसे उच्चस्तरीय बनाया है। शोध के दौरान कई बार घर-परिवार एवं निजी जीवन की व्यस्तता की वजह से जब भी मैं अधिक समय गुजार देता तो मैडम एक श्रेष्ठ गुरु की तरह मुझे ध्यान दिलातीं कि शोध से कैसे ध्यान भटक गया। उनकी वाणी ऐसा असर करती कि मैं दुगने उत्साह एवं शक्ति के साथ पुनः कार्य में लग जाता तथा तब तक नहीं छोड़ता जब तक निश्चित लक्ष्य तक नहीं पहुंच जाता।

परियोजना कार्य की पूर्णता में अपने विभाग के सभी प्राध्यापकों का भी मैं आभार ज्ञापित करता हूं, जिन्होंने इसे उपयोगी बनाने के महत्वपूर्ण सुझाव दिए। साथ ही, अपने मित्र दिपेश मेहरा के प्रति आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने कोरोना महामारी जैसी प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच सर्वेक्षण हेतु आंकड़े एकत्रित करने में मेरी हर-संभव मदद की। वे सभी मित्रजन, परिजन, जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में सहयोग दिया है, सभी का मैं आभार व्यक्त करता हूं।

निखिल पवार

शोधार्थी

विषयानुक्रमणिका

क्रम संख्या	पृष्ठ संख्या
• प्रस्तावना	07-9
• शोध की आवश्यकता एवं महत्व	10
• शोध उद्देश्य	11
• शोध की परिकल्पनाएं	11
• शोध प्रविधि	12-14
अध्याय-प्रथम : डेटिंग का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य	15-21
1.1 डेटिंग की अवधारणा	
1.2 डेटिंग का इतिहास	
1.3 निष्कर्ष	
अध्याय-द्वितीय : डेटिंग और समाज	22-27
2.1 भारत में प्रचलन	
2.2 डेटिंग के प्रकार	
2.3 निष्कर्ष	
अध्याय-तृतीय : टिंडर का आगमन	28-32
3.1 भारत में टिंडर	

3.2 सामाजिक चुनौतियां

3.3 निष्कर्ष

अध्याय-चतुर्थ : ऑनलाइन डेटिंग (टिंडर के संदर्भ में) **33-36**

4.1 ऑनलाइन डेटिंग के फायदे

4.2 ऑनलाइन डेटिंग के नुकसान

4.3 निष्कर्ष

अध्याय-पंचम् : आधुनिक डेटिंग की शब्दावली **37-42**

अध्याय-षष्ठम् : डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' का सामाजिक प्रभाव **43-55**

- **प्रश्नावली उपकरण से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण**

- **शोध-निष्कर्ष** **56-58**
- **शोध सीमाएं** **59**
- **संदर्भ सूची** **60-61**
- **परिशिष्ट** **62-66**

प्रस्तावना

तकनीकी के इस दौर ने मानव समाज को एक दूसरे के काफी निकट ला दिया है। दुनिया भर में आज ऐसी तमाम सुविधाएं उपलब्ध हो गयी हैं जिनके माध्यम से कुछ ही क्षण में व्यक्ति अपने करीबियों से लेकर अजनबियों तक से संपर्क स्थापित कर सकता है तथा अप्रत्यक्ष रूप से उनसे मुलाकात भी कर सकता है। इन सुविधाओं का सिलसिला केवल यहीं तक सीमित नहीं है बल्कि यह अब ऑनलाइन ऐप्स के रूप में विश्व व्यापक हो चुका है। आज ऐसी कई ऑनलाइन ऐप्स मौजूद हैं जो व्यक्तियों को आपस में जुड़ने का अवसर देती हैं। वर्तमान संचार व्यवस्था का तंत्र इतना मजबूत तथा व्यापक है कि अब भौगोलिक दूरियां मायने नहीं रखती हैं। ऑनलाइन डेटिंग ऐप्स भी इन्हीं में से एक हैं जो लोगों के मध्य एक सेतु का कार्य करती हैं। इनके ज़रिए आज कई युवा इंटरनेट के माध्यम से एक दूसरे को डेट कर रहे हैं। डेट करने के इस तरीके को ही ऑनलाइन डेटिंग के नाम से जाना जाता है। जिसमें इंटरनेट के ज़रिए व्यक्ति अपने आस-पास के अन्य व्यक्तियों को खोजता है और उनके संपर्क में आता है। इस प्रकार से यह ऐप्स जोड़े बनाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। टिंडर, बम्बल आदि ऑनलाइन डेंटिग ऐप्स के कुछ मुख्य उदाहरण हैं। लेकिन यह शोध-कार्य विशेष रूप से डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' को लेकर किया गया है। इसमें 'टिंडर' का समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को उजागर किया गया है। यह ऐप युवाओं में ख़ासा लोकप्रिय भी हो रहा है जिसके पीछे कई कारण छिपे हो सकते हैं। जैसे एक उत्तम साथी, जिसकी तलाश अभी तक पूरी नहीं हो पाई है, या फिर व्यस्त जीवन जिसके कारण किसी को प्रत्यक्ष रूप से जान पाना वर्तमान समय में आसान नहीं है, आदि। आमतौर पर एक व्यक्तिगत और प्रेमपूर्ण संबंध को विकसित करने के लिए यह ऐप्स इस्तेमाल किए जाते हैं, लेकिन वर्तमान समय में ऑनलाइन डेटिंग सिर्फ इसी उद्देश्य तक सीमित

नहीं रह गई है। आज का युवा विभिन्न प्रयोग कर रहा है। साथ ही, उसकी महत्वकांक्षाओं एवं ज़रूरतों का दायरा भी बहुत विस्तृत हो चला है। आजकल की युवा-पीढी का मानना है कि अगर शादी से पहले डेटिंग जैसे प्रयोग को अपना लिया जाए तो वह यह बात आसानी से समझ सकते हैं कि संबंधों के प्रति उनकी प्राथमिकताएं एवं अपेक्षाएं क्या हैं। इसके अलावा यह बात भी स्पष्ट हो सकती है कि वह कैसे स्वभाव और व्यक्तित्व वाले साथी के साथ अपना जीवन निर्वाह कर सकते हैं। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि व्यक्ति को भविष्य में अपने लिए एक उपयुक्त जीवन साथी चुनने में सुलभता होती है।

डेटिंग के प्राचीन स्वरूप तो भारत की कई आदिम जनजातियों में पहले से ही प्रचलित रहे हैं किंतु हमारा भारतीय समाज पश्चिमी तौर-तरीकों को अपनाने में सदैव दिलचस्पी लेता रहा है। आधुनिक तौर-तरीकों के रूप में डेटिंग का भारत में आगमन भी पाश्चात्य देशों की ही देन है। वर्तमान में इसका अनुसरण हमारी युवा पीढी द्वारा एक परंपरा के रूप में किया जाने लगा है लेकिन इसका उद्भव कब और कैसे हुआ इस पर गंभीरता से कभी विचार नहीं किया गया। साथ ही भारतीय समाज जो मौलिक रूप से अपने नियमों और कानूनों का पक्का है ऐसे समाज में डेटिंग की आधुनिक अवधारणा का प्रवेश किन परिस्थितियों में हुआ तथा इसमें कौन-कौन से पहलु जुड़ते गए, इस शोध कार्य में इन सभी विषयों पर दृष्टि डाली गई है।

शोध ग्रंथ के प्रथम में शोध की आवश्यकता, उद्देश्य, शोध की परिकल्पनाएं एवं शोध प्रविधि को बताया गया है। शोध के प्रथम अध्याय में डेटिंग की अवधारणा व डेटिंग के इतिहास को डेटिंग के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में दिया गया है। द्वितीय अध्याय में डेटिंग और समाज को भारत में प्रचलन व डेटिंग के प्रकार के द्वारा बतलाया गया है। शोध के तृतीय अध्याय में टिंडर का आगमन, भारत में टिंडर एवं सामाजिक चुनौतियों को रेखांकित किया गया है। चतुर्थ अध्याय में ऑनलाइन डेटिंग के फायदे

एवं ऑनलाइन डेटिंग के नुकसान को टिंडर के संदर्भ में बतलाया गया है। अध्याय पंचम में आधुनिक डेटिंग की शब्दावली शीर्षक के रूप में है, जहां डेटिंग के आधुनिक युग में प्रेम-चलन की शब्दावली के बारे में वर्णन किया गया है। अध्याय षष्ठम् में डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' के सामाजिक प्रभाव का वर्णन किया गया है, इसके अंतर्गत प्रश्नावली उपकरण से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिया गया है। तत्पश्चात शोध-निष्कर्ष तथा शोध की सीमाएं दी गई हैं। परियोजना कार्य के अंत में संदर्भ एवं परिशिष्ट का भी उल्लेख किया गया है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

भारत में इंटरनेट के विस्तार के साथ ऑनलाइन डेटिंग का चलन पहले से बहुत ज्यादा बढ़ा है। आज कल की व्यस्त जिंदगी में ज्यादातर युवा ऑनलाइन डेटिंग करना पसंद करते हैं। पहले विवाह तय करने जैसी सामाजिक प्रक्रिया परिवार के बड़े-बुजुगों को शामिल करते हुए आगे बढ़ती थी, लेकिन अब इसमें डेटिंग साइट्स की भूमिका भी अहम हो चली है। इसमें न्यू मीडिया का योगदान भी महत्वपूर्ण हो जाता है। जिसने संचार व्यवस्था में नए-नए आयाम स्थापित किए हैं तथा समाज में क्रांति लाने का कार्य किया है। आम तौर पर इंटरनेट की सहायता से किसी संबंध को बनाना एक विशुद्ध शहरी घटना के तौर पर देखा जाता था और छोटे शहरों को इस प्रवृत्ति से दूर माना जाता था। इस सांस्कृतिक अवरोध के बावजूद डेटिंग का व्यवसाय भारत में तेजी से पैर पसार रहा है। पूरी तरह तो नहीं लेकिन काफी हद तक ऑनलाइन डेटिंग के पक्ष में भारत में स्थितियां सुदृढ़ हुई हैं। टिंडर भारत में खासा लोकप्रिय डेटिंग ऐप है। देखने तथा प्रयोग करने में तो यह साधारण सा ऐप है जिसे इंटरनेट की मदद से चलाया जा सकता है, लेकिन यह ऐप व्यक्ति के जीवन पर गहरा असर डालते हैं। कहना गलत नहीं होगा कि ऑनलाइन डेटिंग का यह ऐप व्यक्ति को एक दूसरे से जोड़ने, उनकी इच्छाओं की पूर्ति करने और उसका अकेलापन मिटाने में क्रांतिकारी भूमिका निभा रहा है, यही वजह है कि ऑनलाइन डेटिंग ने समाज में ख़ासकर युवाओं के बीच अपनी जड़ें मजबूत कर ली हैं। **"डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' का समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन"** यह शोध का सबसे ज्वलंत विषय है। अतः इसका महत्व वर्तमान परिदृश्य में अपने आप में महत्वपूर्ण है।

शोध उद्देश्य

- डेटिंग वेबसाइट टिंडर द्वारा पड़ने वाला प्रभाव किस प्रकार का है, यह पता लगाना।
- उपयोगकर्ताओं के द्वारा ऐप का उपयोग किए जाने की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
- आज के युवा किस प्रकार से टिंडर का उपयोग कर रहे हैं उसे उभारना तथा उनके द्वारा इसका उपयोग किए जाने के पीछे व्याप्त कारणों का पता लगाना।

शोध की परिकल्पनाएं

1) ऑनलाइन डेटिंग के लिए टिंडर असुरक्षित है।

2) ऑनलाइन डेटिंग करना निजी जिंदगी पर बुरा असर डालता है।

3) टिंडर एक 'सेक्स ऐप' है। यह हुकअप के लिए पार्टनर्स को मिलवाने के लिए जाना जाता है।

4) टिंडर के उपयोग से व्यक्ति की कम्युनिकेशन स्किल में इजाफा होता है।

5) आज निजी स्वतंत्रता ज़्यादा अहम हो गई है जिसके चलते युवाओं की पहली प्राथमिकता खुद के लिए जीना है।

शोध प्रविधि

निदर्शन

'कुछ' को देखकर या परीक्षण कर 'सब' के बारे में अनुमान लगा लेने की विधि को निदर्शन कहते हैं। इस प्रविधि की आधारभूत मान्यता यह है कि इन 'कुछ' की विशेषताएं 'सब' की आधारभूत विशेषताओं का उचित प्रतिनिधित्व करती हैं। यदि 'कुछ' का चुनाव ठीक तरह से किया जाए। 'सब' की परीक्षा करना या देखना असुविधाजनक, धनसापेक्ष और समय सापेक्ष हो सकता है। शोध में निदर्शन प्रविधि का प्रयोग अत्यंत लोकप्रिय है और वह इस अर्थ में कि रोज के जीवन में एक अनाड़ी व्यक्ति भी इसका डटकर प्रयोग करता है। बाजार में गेंहू, चावल अथवा दाल खरीदते समय बोरियों को खुलवाकर उनका एक-एक दाना कोई नहीं परखता अपितु बोरी में से एक मुट्ठी भर दाने निकालकर उनकी जांच कर ली जाती है और फिर उस मुट्ठी भर दाने का मूल्यांकन होता है। यही शोध की निदर्शन प्रविधि है जिसका प्रयोग परिशुद्ध रूप में वैज्ञानिक शोध करने में किया जाता है। निदर्शन के बारे में श्री याटन का मत है कि "निदर्शन शब्द का प्रयोग केवल किसी समग्र चीज की इकाइयों के एक सेट या भाग के लिए किया जाना चाहिए जिसे इस विश्वास के साथ चुना गया है कि वह समग्र का प्रतिनिधित्व करेगा।" इसी प्रकार के विचार गुडे एवं हाट ने प्रकट किए हैं- एक निदर्शन जैसा कि नाम से स्पष्ट है किसी विशाल संपूर्ण का छोटा प्रतिनिधि है। शोध कार्य में निदर्शन प्रविधि ही कई तरह से अधिक लाभप्रद सिद्ध हुई है क्योंकि इसके प्रयोग से समय की बचत, श्रम की बचत, अधिक गहन अध्ययन की संभावना, निष्कर्षों की परिशुद्धता तथा अन्य अनेक लाभ होते है।

निदर्शन प्रविधि का तात्पर्य उस विधि से है जिसकी सहायता से प्रतिनिधित्व पूर्ण निदर्शन का चुनाव किया जाता है। अध्ययन निष्कर्षों के लिए यह अति आवश्यक है कि निदर्शन समग्र का उचित प्रतिनिधित्व कर सके। इसलिए निदर्शन चुनाव का काम मनमाने ढंग से नहीं किया जा सकता है। इसलिए सुनिश्चित प्रविधियों को अपनाना आवश्यक है।

<u>उद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रणाली :-</u> जब शोधकर्ता किसी विशेष उद्देश्य को सामने रखकर जानबूझकर समग्र में कुछ इकाइयों का चुनाव करता है तो उसे उद्देश्यपूर्ण निदर्शन या सविचार निदर्शन कहते हैं। श्री एडील्फ जन्सन ने उद्देश्यपूर्ण निदर्शन की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए लिखा है- "उद्देश्यपूर्ण निदर्शन से अर्थ है इकाईयों के समूहों की एक संख्या को इस प्रकार चुनना कि चुने हुए समूह मिलकर उन विशेषताओं के संबंध में यथासंभव वही औसत अथवा अनुपात प्रदान करें जो कि समग्र में है और जिनकी सांख्यिकीय जानकारी पहले से ही है।"

प्रस्तुत शोध में प्रतिनिधि इकाईयों का चुनाव उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के द्वारा किया गया है। यह सुनिश्चित करने का पूर्ण प्रयास किया गया है कि नमूना यूनिवर्स का प्रतिनिधित्व करने वाला हो तथा विश्वसनीयता की कसौटी पर खरा उतरता हो।

शोध विधि

शोध के लिए अनेक विधियां अपनायी जाती हैं। शोधकर्ता को अपनी सुविधा अनुसार उस विधि का चुनाव करना होता है जो उसके शोध के अधिक अनुकूल होती है। प्रस्तुत शोध कार्य में 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है। जो कि शोध विषय के अनुरूप उपयुक्त साबित होती है।

सर्वेक्षण विधि :- किसी सामाजिक समस्या की तह तक जाने और उसका हल खोजने के लिए प्रश्नावली, अनुसूची या साक्षात्कार के माध्यम से आंकड़े जुटाना सर्वेक्षण कहलाता है। यह शोध की सबसे पुरानी और सामान्य विधि है। सर्वेक्षण का संबंध वर्तमान या पूर्व में विद्यमान रही स्थितियों को जानने, उनका विवरण, विश्लेषण या व्याख्या करने और उन्हें दर्ज करने से होता है। इसके अंतर्गत जनसंख्या की आम राय, परिप्रेक्ष्य और व्यवहार को जानने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है। इस विधि में पूरी जनसंख्या में से नमूना लिया जाता है और वह नमूना उस जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। उस नमूने से प्राप्त सूचना को पूरी जनसंख्या के सामान्य विचार या व्यवहार की तरह माना जाता है। प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत शोध उपकरण के रूप में प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रश्नावली :- जब काफी बड़े क्षेत्र में सूचनादाता फैले होते हैं और उनसे व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करना संभव नहीं होता तो उनसे सूचनाएं एकत्र करने के लिए प्रश्नावली को डाक या ई-मेल एक माध्यम से एक अनुरोध पत्र के साथ भेज दिया जाता है। सूचनाप्रदाता निर्धारित समय में उसे भरकर शोधकर्ता के पास वापस भेज देता है।

प्रस्तुत शोध में अध्ययन का क्षेत्र बहुत विस्तृत होने के कारण प्रत्यक्ष अवलोकन कर पाना संभव नहीं था इसलिए सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत शोध उपकरण के रूप में प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

अध्याय-प्रथम

डेटिंग का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

1.1 डेटिंग की अवधारणा

सामान्य भाषा में 'डेटिंग' एक प्रकार का पारस्परिक मेल-जोल है, जो दो लोगों को अस्थायी तौर पर करीबी रिश्ते में जुड़ने की संभावनाएं मुहैया करवाता है। संबंधित युवक और युवती सामाजिक दृष्टिकोण में अविवाहित युगल के रूप में देखे जाते हैं। इसे किसी रिश्ते के बनने से पहले उसमें जरूरी समझ को विकसित करने का सबसे आसान और समझदारी भरा रास्ता कहा जा सकता है। साथ ही, यह एक फिसलन भरा रास्ता भी है। जिसमें सावधानी ना बरतने पर यह दो लोगों के लिए, या दोनों में किसी एक के लिए काफी मुश्किलें पैदा कर सकता है। डेटिंग का स्वरूप हर समाज में भिन्न होता हैं। पाश्चात्य संस्कृति खुले विचारों वाली है इसीलिए पश्चिम के देशों में इसे सामान्य रूप से मान्यता प्राप्त है और उसमें डेटिंग और युगल पर कोई सामाजिक बंदिशें नहीं होतीं। लेकिन भारतीय समाज परंपरावादी और मर्यादाओं के बंधनों में बंधा हुआ समाज रहा है। परिणामस्वरूप इसमें स्वच्छंद और फूहड़ आचरण को घृणित दृष्टि से देखा जाता है। प्रेमी-जोड़ा कई सामाजिक मर्यादाओं में रहकर ही अपने रिश्ते का निर्वाह करता है।

साधारण शब्दों में जब दो लोग आपस में नियत समय एवं पूर्व निर्धारित स्थान पर मिलते है तो उसे डेटिंग कहते है। पहले इस सन्दर्भ में विपरीत लिंग की ही बात की जाती थी, लेकिन भारत में सर्वोच्च न्यायालय ने 2018 में समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से हटा दिया था। आज इसका अर्थ इससे कहीं अधिक व्यापक हो चला है। साथ ही, आज इसके संबंध में अनेक प्रकार की भ्रांतियां भी फैली हुई हैं। मसलन डेट

सिर्फ युवाओं के लिए होता है, डेट फिजूल का काम है, डेट पर सिर्फ सेक्स संबंधित बातें होती है इत्यादि। लेकिन यह कहना उचित होगा कि डेट पर जाने का यह अर्थ तो बिल्कुल नहीं है। डेट पर हर उम्र एवं वर्ग के लोग जा सकते है। जब किन्हीं उद्देश्यों के लिए डेटिंग के माध्यम से मिला जाए तो इसके हर व्यक्ति के संबंध में अपने मायने है। अर्थात हर व्यक्ति के लिए इसका अलग - अलग अर्थ होता है। अपने व्यापक अर्थ में डेट सिर्फ दो लोगों में ही नहीं, अपितु सामूहिक रूप में भी हो सकती है। यह सामान्य रूप से सामाजिक समरसता को भी दर्शाता है। उदाहरण के तौर पर अगर आपका कोई दोस्त या रिश्तेदार आपसे किन्ही कारणों से गुस्सा है तो उनको मनाने के लिए आप उससे अकेले या किसी और व्यक्ति के साथ मिलते है, तो वह भी एक प्रकार से डेट के अंतर्गत ही आता है। वहीं अगर व्यक्ति अपने दोस्तों या परिवारजनों के साथ कहीं घूमने या पिकनिक मनाने के लिए जाता है तो वह भी एक प्रकार का डेट ही है। आमतौर पर डेटिंग को युवक और युवती के मध्य ऐसा संबंध माना जाता है जो उन्हें विवाह से पहले करीब लाने में सहायक होता है, ताकि वे दोनों एक-दूसरे को भली प्रकार जान लें। जिससे आने वाले समय में उनके वैवाहिक जीवन में कोई समस्या उत्पन्न ना हो। हालांकि ऐसा कम ही होता है कि डेटिंग के बाद अर्थात एक-दूसरे को जानने और समझने के बाद युवक और युवती अपना पूरा जीवन साथ बिताने में खुद को सहज महसूस करें। आजकल डेटिंग एक आम बात हो गई है। पहले किसी से बात करने और डेट पर चलने के लिए कहने की हिम्मत जुटानी पड़ती थी। एक समय था जब यह सब करने में महीनों-सालों लगते थे। लेकिन अब यह बीते समय की बात हो गई है। भारत में इंटरनेट नए दोस्तों को खोजने का भी माध्यम होता जा रहा है। मेट्रो शहरों में जिंदगी इतनी व्यस्त हो गई है कि लोग अपनों को तो दूर की बात, ठीक से स्वयं को भी समय नहीं दे पा रहे हैं। शहरी जीवन धीरे - धीरे इंटरनेट पर आश्रित होने लगा है। हर छोड़ी - बड़ी चीजों को खोजने के लिए लोग ऑनलाइन ब्राउजिंग

का सहारा ले रहे हैं। व्यस्त दिनचर्या और काम की अधिकता के बीच समय ना मिल पाने के कारण वह भौतिक रूप से नहीं मिल पाते इसीलिए इंटरनेट चैटिंग की सहायता से वह आसानी से एक-दूसरे से संपर्क कर लेते हैं। आज तकनीक ने दुनिया को इतना तीव्र बना दिया है कि किसी खास को ढूंढने में भी पल भर लगता है और यह सब ऑनलाइन डेटिंग से ही संभव हो पाया है। ऑनलाइन डेटिंग का शाब्दिक अर्थ मेल मिलाप या दोस्ती होता है। इसमें लोग इंटरनेट के माध्यम से एक दूसरे से मिलते हैं और सामाजिक गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं। आमतौर पर यह व्यक्तिगत संबंधों को विकसित करने का एक तरीका है। ऑनलाइन डेटिंग का उपयोग करने के लिए एक व्यक्ति ऑनलाइन डेटिंग साइट पर एक एकाउंट बनाता है और फिर उसमें फोटो तथा अपने बारे में जानकारी भी देता है। प्रायः इस पद्धति में व्यक्ति सबसे पहले एक दूसरे को पसंद करते हैं, बातचीत करते हैं और फिर मुलाकात करते हैं। इसकी शुरूआत दोस्ती से ही होती है और आगे शादी तक जाने की संभावना बनी होती है। हालांकि जरूरी नहीं है कि हमेशा डेटिंग का मतलब शादी तक का सफर तय करना हो। आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में अधिकतर लोगों को किसी खास दोस्त के साथ सिर्फ वक्त बिताना अच्छा लगता है, मौजूदा युवा पीढ़ी न सिर्फ नए आविष्कार कर रही है बल्कि वे रिश्तों को बेहतर बनाने के लिए अलग - अलग रास्ते भी तलाश रही है। डेटिंग कल्चर उन्हीं में से एक है।

एक संस्था के रूप में 'डेटिंग' मुख्य रूप से पिछली कुछ सदियों में उभरा है। कई बार डेटिंग के दौरान ही व्यक्ति यह जान पाता हैं कि ये रिश्ता जीवन भर चलने वाला नहीं है। यहां सबकुछ दोनों पक्षों के जज्बातों, परिस्थितियों व अनुभव पर निर्भर करता है कि रिश्ता किस प्रकार कितना आगे जाता है। कई बार इसमें बाहरी तत्वों जैसे, परिवार एवं मित्रों आदि की भी भूमिका देखने को मिलती है।

1.2 डेटिंग का इतिहास

डेटिंग कोई आधुनिक विचारधारा ना होकर प्राचीन समय से चली आ रही परपंरा है। मध्य युग के यूरोप में, जहां विवाह को पारिवारिक व्यवसाय के रूप में देखा जाता था, वहां डेटिंग या प्रेम-संबंधों को बड़ी बुद्धिमत्ता और विवेकशीलता के साथ विवाह तक नहीं पहुंचने दिया जाता था। छुप-छुप कर मिलना डेटिंग प्रक्रिया का एक हिस्सा हुआ करता था। यद्यपि उस काल में डेटिंग पर पुरुष का एकाधिकार हुआ करता था। वह जब चाहे किसी भी महिला के साथ संबंध जोड़ सकता था और इसमें महिला के विरोध को सहन नहीं किया जाता था।

16वीं शताब्दी में वैयक्तिक तौर पर अधिकार देने के लिए आंदोलन किया गया, जिसके अंतर्गत महिलाओं और पुरुषों को समान राजनैतिक और सामाजिक अधिकार देने की मांग की गई। इसी के साथ उन्हें अपने जीवन-साथी का चुनाव करने की भी आजादी देने की पैरवी की गई।

डेटिंग और उससे जुड़ी गतिविधियों का सार्वजनिक प्रदर्शन सबसे पहले मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग के युगलों द्वारा किया गया। क्योंकि उनके घर या आसपास कोई ऐसी जगह नहीं थी, जहां वे एक-दूसरे के साथ एकांत में समय बिता पाएं। परंपरागत डेटिंग पद्धति में किशोरवय और तीस के दशक के आरंभ तक विवाह से पहले एक - साथ समय बिताना, भोजन करना या कहीं घूमने जाना शामिल था। लेकिन समय के साथ-साथ डेटिंग के स्वरूप में बेहद महत्वपूर्ण परिवर्तन आए जिसने इसके स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया।

इंटरनेट एक नवीन सामाजिक संस्था है जो उन लोगों को जोड़ने की क्षमता रखती है जो कभी आमने-सामने नहीं आए हैं और इस प्रकार डेटिंग की प्रक्रिया के बदलने की

संभावनाएं विद्यमान हैं। भारतीय समाज में विवाह एवं बच्चे पैदा करने को हमेशा एक महत्वपूर्ण जीवन लक्ष्य के रूप में देखा गया है। हालांकि ऑनलाइन डेटिंग के बाद से स्थितियों में कुछ बदलाव ज़रूर आया है। नए रिश्ते बनाने की इच्छा रखने वाले लोगों के लिए ऑनलाइन डेटिंग आम बात हो गई है। अन्य देशों की भांति भारत में भी डेटिंग कल्चर के बढ़ने की वजह युवाओं का नए विकल्प तलाशना और सुरक्षित रिश्तों की और बढ़ना है। इंटरनेट और मोबाइल प्रौद्योगिकी की प्रगति ने संचार के क्षेत्र में बड़े परिवर्तनों की शुरुआत की है। समय क्षेत्र ही अब दुनिया के किसी भी हिस्से में मित्रों तक पहुंचने की एकमात्र समस्या बची है। लोग अपने मोबाइल फोन या कंप्यूटर स्क्रीन पर एक दूसरे को इस प्रकार देख तथा बोल सकते हैं जैसे कि वह उनके ठीक बगल में बैठे हों। Baym के शब्दों में, इसका तात्पर्य है कि आखिरकार लोग सदियों बाद बेहद दूरी मौजूद होने पर भी बहुत तेज गति से परस्पर संवाद स्थापित कर सकते हैं [1]।

ऑनलाइन डेटिंग इतनी लोकप्रिय कैसे हुई [2]?

- सन 1995 को पहली बार डेटिंग की दुनिया में एक ऐप का अवतरण हुआ जब match.com को लॉन्च किया गया। इस वेबसाइट ने कुंवारे लोगों को एक प्रोफ़ाइल और तस्वीर प्रेषित करने तथा ऑनलाइन चैट या बातचीत करने की अनुमति दी थी। एप्लिकेशन का उद्देश्य उन लोगों को अवसर उपलब्ध कराना था जो दीर्घकालिक संबंधों की तलाश कर रहे थे।
- अगले 10-15 वर्षों में बहुतायत की संख्या में अन्य डेटिंग वेबसाइटों के भण्डार स्थापित किए गए जिनका लक्ष्य समाज के एक विशेष हिस्से का प्रतिनिधित्व करना था, इनमें निम्नांकित शामिल हैं -

- OKCupid (2004)

- Plenty of Fish (2006)
- Grindr (2009)
- Happn (2013)

➢ 'स्वाइप' पर आधारित डेटिंग प्लेटफॉर्म के रूप में 2012 में टिंडर को लॉन्च किया गया। इसके शुरुआती लॉन्च के बाद से ही इसके उपयोग में बढ़ोत्तरी हुई और मार्च 2014 तक दुनिया भर में एक दिन में एक बिलियन मैच हुए।

➢ 2014 में टिंडर की सह-संस्थापक व्हिटनी वोल्फ हर्ड ने टिंडर को छोड़ डेटिंग ऐप Bumble लॉन्च किया। इस ऐप में महिलाओं को दी गई महत्वपूर्ण भूमिका इसे खास बनाती है। जिसमे केवल महिलाएं ही पहले आउटरीच कर सकती है। 2017 में Match Group ने Bumble को 450 मिलियन डॉलर में खरीदने की पेशकश की थी। जिससे वोल्फ हर्ड के नेतृत्व वाली कंपनी Bumble ने इनकार कर दिया था।

➢ Tinder, Badoo और हाल ही में Bumble जैसे मोबाइल डेटिंग ऐप्स की लोकप्रियता का कारण व्यस्त दिनचर्या वाले युवा उपयोगकर्ताओं की बढ़ती संख्या है।

➢ 1990 के दशक में ऑनलाइन डेटिंग को प्यार पाने के लिए आखिरी खाई और एक हताश प्रयास तथा कलंक की भांति माना जाता था।

➢ लेकिन अब यह विश्वास भंग हो गया है। आज लगभग एक तिहाई विवाह उन जोड़ों के बीच है जो एक-दूसरे से ऑनलाइन मिले थे।

➢ 2014 के एक सर्वेक्षण में पाया गया कि 84 फीसदी डेटिंग ऐप उपयोगकर्ता एक रोमांटिक रिश्ते की तलाश में ऑनलाइन डेटिंग सेवाओं का उपयोग कर

रहे थे। 24 फीसदी ने कहा कि उन्होंने यौन इच्छाओं की पूर्ति की मंशा से ऑनलाइन डेटिंग ऐप का इस्तेमाल किया है।

1.3 निष्कर्ष

एक समय था, जब भारतीय समाज में डेटिंग को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। लेकिन अब यह कहा जा सकता है कि आज इस विषय में स्थितियों में बहुत हद तक बदलाव आया है। इंटरनेट और मोबाइल प्रौद्योगिकी की प्रगति ने संचार के क्षेत्र में बड़े परिवर्तनों की शुरुआत की है, ऑनलाइन डेटिंग भी उन्हीं का हिस्सा है। जिसके फलस्वरूप डेटिंग की परंपरागत एवं नवीन अवधारणा में काफी परिवर्तन देखने को मिलता है। अब इंटरनेट की सुविधा सहज होने के कारण डेटिंग की यह ऑनलाइन साइटें विशेषकर युवाओं के बीच बहुत लोकप्रिय हो गई हैं। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण यह है कि इन साइटों के माध्यम से युवा अलग-अलग क्षेत्रों और देशों में रहने वाले लोगों के संपर्क में तो आते ही हैं साथ ही उन्हें अपनी अपेक्षाओं व आवश्यकताओं की भी जानकारी होती है। वहीं स्वयं को अभिव्यक्त करने का पक्ष भी मज़बूत होता है। इस अध्याय में हमने देखा कि समय के साथ-साथ डेटिंग के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए जिसने इसके स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया। आज भारत में ऑनलाइन डेटिंग ऐप्स का बाजार विश्व व्यापक हो चुका है और आगे भी इसे तेजी से उभरते हुए एक उद्योग के रूप में देखा जा सकता है। यह कहना बिलकुल उचित होगा कि इसे पश्चिमी देशों में ही नहीं बल्कि भारत में भी बहुत विस्तार मिला है।

अध्याय-द्वितीय

डेटिंग और समाज

2.1 भारत में प्रचलन

वर्षों से भारत में यह परंपरा रही है कि परिवार के बड़े-बुजुर्ग ही आपसी समझ से विवाह निर्धारित कर दिया करते थे। विवाह से पहले युवक और युवतियों को एक-दूसरे से मिलने की भी इजाजत नहीं थी। ऐसे में किसी गैर-पुरुष से महिलाओं का मेल-जोल संभव ही नहीं था। लेकिन डेटिंग का भारत में प्रचलन कोई नया घटनाक्रम नहीं बल्कि कुछ भारतीय समुदायों की बहुत पुरानी परंपरा है। पूर्वोत्तर राज्यों की जनजातियों में सदियों से युवागृह की परंपरा चलती आ रही है, जिसके अंतर्गत किशोरवय लड़का और लड़की निर्धारित समय तक एक-दूसरे के साथ रहते हुए कला, शिल्प और वैवाहिक जीवन के तौर तरीके सीखते हैं, और विवाह के समय इन्हीं किशोरवय युवक-युवतियों में से वर-वधू का चुनाव कर लिया जाता है। यद्यपि आय के साधनों का फैलाव और दूसरे क्षेत्रों में पलायन के कारण इनकी संख्या में कुछ हद तक कमी आई है। लेकिन आज भी भारतीय समाज में इनकी उपस्थिति को नकारा नहीं जा सकता है। इसके अलावा प्राचीन काल के राजा-महाराजा भी अपनी पसंद की युवती के समक्ष प्रेम-प्रस्ताव रख देते थे। लेकिन वे केवल विवाह होने के बाद ही एक-दूसरे के साथ समय बिताने के लिए स्वतंत्र थे। धीरे-धीरे यह मानसिकता बदलती गई। विवाह से पहले लड़के और लड़की के मिलने को मान्यता मिल गई। लेकिन उनकी मुलाकात कब और कहां होगी इसका निर्णय परिवार वाले ही लेते थे।

आधुनिक डेटिंग और इस परंपरागत मेल-मिलाप के स्वरूप में काफी हद तक असमानताएं मौजूद हैं लेकिन फिर भी भारत के संदर्भ में डेटिंग का जिक्र करते हुए

युवागृह जैसी प्राचीन और सामाजिक परंपराओं का उल्लेख करना जरूरी है। आधुनिकता के इस दौर में स्थिति काफी हद तक बदल चुकी है। अब प्रेम-विवाह की स्वतंत्रता के चलते कई मामलों में युवक-युवतियां डेटिंग के माध्यम से एक-दूसरे को जानने व समझने के बाद विवाह के निर्णय तक पहुंचते हैं। अस्थायी और प्रतिबद्धता विहीन अपने इस संबंध में वह पूर्ण रूप से स्वतंत्र हैं कि वे सहज ना होने पर इसे तोड़ दें। पढ़ाई और काम में व्यस्तता के चलते आज-कल के युवाओं का सर्कल बहुत छोटा हो गया है। उनके कुछ गिने-चुने दोस्त होते हैं। डेटिंग ऐप का चलन बढ़ने का कारण ही यही है कि लोग नए लोगों से मिलना चाहते हैं, अपनी पसंद के लोगों से मिलना चाहते हैं, जिनसे उनके विचार मिलते हों और पसंद मिलती हो। अब नई पीढ़ी, पढ़ाई और नौकरी के लिए अलग-अलग शहरों में जाती है। जहां वे अपना नया सर्कल बढ़ाना चाहते हैं। आज हर किसी के पास स्मार्टफोन है। लोग अपने इस निजी उपकरण के माध्यम से सब काम करने लगे हैं। आज का युवा अपनी ज़िंदगी पर कंट्रोल भी चाहता है और अपनी ज़िम्मेदारी भी लेता है। आजकल जब तक युवा अपना करियर सेट करते हैं वह 30-35 साल के हो जाते हैं। तब तक वह शादी नहीं करते और कमिटमेंट में नहीं जाना चाहते। लेकिन वह चाहते हैं कि कोई उनके साथ हो, जिसके साथ वो घूम सकें। साथ ही, कई लोग करियर की संभावनाओं के लिए संपर्क बढ़ाना चाहते हैं इसलिए वह डेटिंग ऐप का सहारा लेते हैं। वर्तमान समय के हालात और परिस्थितियां भी पहले जैसी जटिल और रूढ़ नहीं रहीं हैं। जिसके चलते आज व्यक्ति अपने जीवन साथी का चुनाव अपनी प्राथमिकताओं और अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर करने के लिए स्वतंत्र है। पहले की तरह मनुष्य आज अपने परिवार पर उतना निर्भर नहीं है। साथ ही माता-पिता की मानसिकता भी कुछ हद तक विस्तृत हुई है। वे अपने बच्चों को स्वयं का साथी चुनने देने में कोई आपत्ति नहीं रखते जिसमें कोई बुराई भी नहीं है। डेटिंग शब्द जिसे कुछ समय पहले तक समाज में गलत

समझा जाता था, आज खासतौर पर युवाओं में बेहद प्रचलित हो गया है। प्रतिबद्धता और उत्तरदायित्वों से बचने के लिए डेटिंग को एक सामान्य और अगंभीर संबंध के रूप में अपनाया गया है। डेटिंग की आड़ में संबंधों और भावनाओं से खिलवाड़ भी एक आम बात बन गई है।

2.2 डेटिंग के प्रकार

डेटिंग के माध्यम से लोग एक-दूसरे से मिलते हैं और एक दूसरे के व्यक्तित्व से परिचित होते हैं फिर चाहे वह प्रत्यक्ष रूप में हो या अप्रत्यक्ष रूप में। विभिन्न व्यक्ति अलग-अलग तरीकों से डेट करना पसंद करते हैं। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि डेटिंग को लेकर उनकी आवश्यकताएं एवं उद्देश्य क्या हैं तथा वह किस प्रकार के परिप्रेक्ष्य, अनुभवों और संस्कृति से संबंध रखते हैं। डेटिंग का हर रूप हर व्यक्ति या उसकी संस्कृति के हिसाब से अलग होता है। इन्हीं आधारों पर डेटिंग के कई प्रकार देखे जा सकते हैं –

ऑनलाइन डेटिंग

ऑनलाइन डेटिंग वह तरीका है जहां लोग इंटरनेट पर मिलते हैं। कुछ समय इंटरनेट पर एक-दूसरे को जानने के बाद वह व्यक्तिगत रूप से मिलते हैं। अक्सर, ऑनलाइन चैट या ईमेल के दौरान लोग आपस में फोटो का आदान प्रदान करते हैं। एक बार आपसी तालमेल मिलने के बाद लोग अक्सर मिलने लगते हैं। आज के समय में ऑनलाइन डेटिंग बहुत लोगों के लिए सुविधाजनक और आसान तरीका है। ऑनलाइन डेटिंग के लिए भी लोग डेटिंग साइट का उपयोग करते हैं। अब वह चाहें

टिंडर हो या क्यूपिड। आजकल अलग-अलग डेटिंग साइट्स के माध्यम से लोग ऑनलाइन डेटिंग कर रहे हैं।

ब्लाइंड डेटिंग

ब्लाइंड डेटिंग दो लोगों को मिलाने का एक बहुत ही अनोखा तरीका है। डेटिंग के इस तरीके में दो लोग, जो एक दूसरे को बिल्कुल भी नहीं जानते, उन्हें अपने किसी दोस्त द्वारा डेट पर जाने के लिए तैयार किया जाता है। ब्लाइंड डेट आमतौर पर दोस्तों, परिवार या कॉलीग्ज द्वारा आयोजित की जाती है। ब्लाइंड डेटिंग पर जाने के लिए आपको डेटिंग साइट्स की जरूरत नहीं होती। ब्लाइंड डेटिंग के लिए व्यक्ति के दोस्त तथा रिश्तेदार ही आपके लिए डेटिंग साइट्स का काम करते हैं।

कैज्युअल डेटिंग

कोई डेटिंग कैज्युअल डेटिंग तब कहलाती है जब कोई व्यक्ति एक समय पर कई लोगों को डेट करता है। कैज्युअल डेटिंग उन लोगों द्वारा की जाती है जो अपने डेटिंग साथी के साथ घर बसाने में कोई दिलचस्पी नहीं रखते। कैज्युअल डेटिंग का प्रयोग ज़्यादातर उन लोगों के लिए है जो केवल यौन संबंधों की तलाश में हैं। कैज्युअल डेटिंग के लिए लोग अलग-अलग डेटिंग साइट्स का इस्तेमाल करते हैं। दोनों के बीच किसी भी तरह का कमिटमेंट नहीं होता है। दोनों साथी एक समय पर कई अलग-अलग लोगों को डेट करते हैं।

स्पीड डेटिंग

इसकी संकल्पना पश्चिमी देशों से आई है, लेकिन अब इसे भारत के साथ-साथ दुनिया के कई देशों में पंसद किया जा रहा है। स्पीड डेटिंग कार्यक्रम में सिंगल लड़के-लड़कियां मिलते हैं। मसलन, अगर 10 लड़कियां और 10 लड़के हैं तो सभी को एक-

दूसरे से अलग-अलग बात करने का अवसर मिलेगा। इसके लिए उन्हें तक़रीबन आठ मिनट का वक़्त दिया जाता है। इस आठ मिनट में वह एक-दूसरे की पसंद-नापसंद और सामान्य परिचय जान सकते हैं।

डबल डेटिंग

डबल डेटिंग में जोड़े एक साथ बाहर जाते हैं। यह किशोरों, वयस्क जोड़ों के बीच अधिक लोकप्रिय है, जिनकी समान रुचि हैं। डबल डेटिंग व्यक्ति को यह देखने का अवसर देती हैं कि उसकी डेट अन्य लोगों के साथ कैसे बातचीत करती है। डेटिंग साइट्स के जरिए डबल डेटिंग भी की जाती है। बहुत से लोग एक समय पर दो अलग-अलग डेटिंग साइट्स के जरिए एक-दूसरे को डेट करते हैं।

सीरीयस डेटिंग

दो व्यक्तियों के बीच सीरीयस डेटिंग तब होती है, जब दो लोग एक-दूसरे को पूरी तरह से समय देते हैं और खुद को एक कपल मानते हैं। सीरीयस डेटिंग में एक दूसरे के प्रति प्रतिबद्धता तथा जिम्मेदारी का एहसास शामिल होता है। इस प्रकार की डेटिंग अक्सर सगाई और उसके बाद विवाह में परिवर्तित हो जाती है।

2.3 निष्कर्ष

डेटिंग के मौलिक स्वरूप और अर्थ पर दृष्टि डालें तो यह दो लोगों को करीब लाने वाला एक अनूठा संबंध है। ताकि उन दोनों में पारस्परिक समझ और निर्भरता के भाव का विकास हो सके। लेकिन अगर इसका अनुसरण केवल अपने फायदे और स्वार्थ के लिए किया जाएगा तो यह एक बड़ी और चिंतनीय समस्या को पैदा कर सकता है। जैसे-जैसे डेटिंग की अवधारणा का विकास होता चला गया उसी प्रकार इसमें नए-नए पक्ष जुड़ते चले गए। तकनीक के बढ़ते दौर में आज के युवा अपना हमसफर, दोस्त तथा बेहतर समय बिताने के लिए साथी चुनने के लिए डेटिंग एप्स का इस्तेमाल करने लगे हैं। जो कि आज हमारे समाज के एक बड़े हिस्से की ज़रुरत बनकर स्थापित हो गए हैं। पहले रिश्तों में महिलाएं ज्यादा कॉम्प्रोमाइज करती थीं। वह ज्यादा एडजस्टमेंट करती थीं लेकिन अब जमाना बदल गया है। महिलाएं अपने अधिकारों को लेकर पहले से अधिक सजग हैं। अब वह काम करने लगी हैं तो उनके पास ज्यादा अवसर हैं पहले महिलाएं ज्यादा डेटिंग एप्प इस्तेमाल नहीं करती थी, पुरुष ज्यादा करते थे लेकिन अब महिलाएं भी अपनी सेक्सुअल इच्छाओं के बारे में बात कर रही हैं, अपनी पसंद-नापसंद के बारे में बात कर रही हैं, ऑर्गेज्म के बारे में बात कर रही हैं। कुछ महिलाएं शादी ना करके सिंगल रहना चाहती हैं जबकि पहले ऐसा संभव नहीं था। हालांकि डेटिंग का मूल औचित्य तो यही है कि संबंधित युवक-युवतियों के मंतव्य बिल्कुल स्पष्ट और परिष्कृत हों। संबंध का चलना या ना चलना परिस्थितियों पर निर्भर होता है। व्यक्ति केवल यही कोशिश कर सकता है कि संबंध-विच्छेद के बाद भी दोनों में किसी भी प्रकार का मनमुटाव या द्वेष ना रहे।

अध्याय-तृतीय

टिंडर का आगमन

3.1 भारत में टिंडर

डेटिंग ऐप 'टिंडर' 12 सितंबर, 2012 को लॉन्च किया गया था। इसका हेडक्वाटर लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया में स्थित है। Sean Rad और Justin Mateen द्वारा इसकी स्थापना की गई तथा आज यह ऑनलाइन डेटिंग ऐप में सबसे लोकप्रिय होने के साथ 196 देशों में कार्य कर रहा है। निजी तौर पर स्थापित किए गए टिंडर को 2017 में मैच ग्रुप ने 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर खरीद लिया था।

भारत में टिंडर ने 2013 से अपनी सेवाएं देनी शुरू की थी और आज यह खासा लोकप्रिय डेटिंग ऐप है। इसके अलावा लोग, बंबल, हैप्पन, ट्रूली मैडली, ओके क्यूपिड, ग्राइंडर जैसे अनेक एप्प का उपयोग कर रहे हैं। लेकिन पिछले कुछ सालों से भारत में टिंडर की रैंकिंग डेटिंग ऐप्स में नंबर वन रहती है। यह हर उस व्यक्ति के लिए है जो डेटिंग के लिए पार्टनर की तलाश कर रहे हैं। यह एक फ्री डेटिंग ऐप है जिसे मोबाइल फोन में डाउनलोड किया जा सकता है तथा ब्राउज़र का इस्तेमाल करके चलाया जा सकता है। गूगल प्ले स्टोर, एप्पल ऐप स्टोर के साथ-साथ यह वेब पर भी उपलब्ध है। यह उपयोगकर्ताओं को उनकी भौगोलिक निकटता के आधार पर दूसरों से मैच करवाता है। यानी यह व्यक्ति के आस-पास ही उसके लिए साथी को ढूंढता है। टिंडर में एक स्वाइपिंग टूल होता है, जब किसी को कोई व्यक्ति पसंद आता है तो वह उसे दाईं ओर स्वाइप करता है और पसंद ना आने पर बाईं ओर स्वाइप करना होता है। अगर दो व्यक्ति एक दूसरे को दाईं ओर स्वाइप करते हैं तो इसका

अर्थ होता है कि दोनों पक्षों ने एक-दूसरे को पंसद कर लिया है। यह एक 'मैच' (match) कहलाता है। फिर वे व्यक्ति ऐप के माध्यम से बातचीत (chat) करने में सक्षम होते हैं। टिंडर पर लोग अपना सेक्सुअल ओरिएंटेशन भी साझा कर सकते हैं। उसमें इसके लिए कई विकल्प मौजूद होते हैं, जैसे - स्ट्रेट, लेस्बियन, गे, बाइसेक्सुअल, एसेक्सुअल, डेमीसेक्सुअल, पैनसेक्सुअल, क्वीर, बाई-क्यूरियस, एरोमैंटिक। इसके द्वारा लोग अपनी सेक्सुअल प्रेफरेंस के मुताबिक लोगों से जुड़ सकते हैं। इसके अलावा कई फीचर्स हैं जो सभी यूजर्स के लिए फ्री नहीं हैं। यदि कोई टिंडर की सभी सुविधाओं का लाभ उठाना चाहता है तो उसे 'टिंडर प्लस' और 'टिंडर गोल्ड' की सदस्यता लेनी होती है। इससे असीमित राइट स्वाइप, हर महीने एक बूस्ट और 5 सुपरलाइक का विकल्प मिलता है। साथ ही, टिंडर अपने इन फीचर्स में समय-समय पर कुछ बदलाव भी करता रहता है। जैसे पहले टिंडर में व्यक्ति प्रत्येक 12 घंटे में 100 बार स्वाइप कर सकते थे। लेकिन अब सभी को अलग-अलग संख्या में स्वाइप दिया जाता है। टिंडर यह गणना कैसे करता है इसकी जानकारी तो उपलब्ध नहीं है लेकिन संभावित है कि यह व्यक्ति के लिंग, उम्र, स्थान और उसके द्वारा किए जा रहे ऐप के उपयोग पर निर्भर करता है। टिंडर के मुताबिक उसके अधिकतर उपयोगकर्ता 18 से 26 साल की उम्र के बीच के होते हैं। टिंडर का दावा है कि वह अबतक 55 बिलियन मैच करा चुका है [3]। इसी कारण यहां अलग-अलग पृष्ठभूमि व अनुभव वाले लोग मिलते हैं। ऑनलाइन मार्केट रिसर्चर स्टेटिस्टा के मुताबिक भारत में 2020 में दो करोड़ पच्चीस लाख लोग ऑनलाइन डेटिंग एप्प इस्तेमाल कर रहे हैं। अनुमान है कि 2024 तक यह यूजर दो करोड़ 68 लाख हो जाएंगे। फिलहाल यूजर 1.6% की दर से बढ़ रहे हैं और 2024 तक ये दर 1.9% होने का अनुमान है। अच्छा

मैच मिलने की संभावना को बढ़ाने के लिए इनमें से कई लोग डेटिंग एप्स पर पैसा भी खर्च करते हैं। स्टेटिस्टा के मुताबिक 2020 में ऑनलाइन डेटिंग मार्केट की आमदनी छह करोड़ तीस लाख अमरीकी डॉलर रही है यानी औसतन एक यूजर से यह मार्केट लगभग 199 रुपये कमा रहा है [4]।

भारत एशिया में टिंडर का शीर्ष बाजार है। टिंडर ने उन शहरों का विवरण भी साझा किया है जो ऐप पर सबसे अधिक सक्रिय हैं। इस क्रम में दिल्ली-एनसीआर, बेंगलुरु, पुणे, मुंबई, कोलकाता और चंडीगढ़ भारत में टिंडर पर सबसे अधिक सक्रिय शहर हैं। वहीं कोरोनावायरस महामारी के कारण लगे लॉकडाउन से बढ़ी दूरियों ने कई रिश्तों को बिगाड़ा है, तो दूसरी तरफ इस दौरान भारत में ऑनलाइन डेटिंग ऐप्स को काफी बढ़ावा मिला है। लॉकडाउन के दौरान घर पर रहते हुए लोगों ने अपने साथी की तलाश के लिए टिंडर जैसी ऐप्स का रुख किया। घर में एकाकीपन को मिटाने के लिए डेटिंग और मेट्रीमोनी साइट्स पर भी भरपूर विजिट की गई। सामाजिक रूप से एक दूसरे से जुड़ने के क्षेत्र में (पर्सनल काउंसलिंग, डेटिंग और मैट्रिमोनी वेबसाइट्स) में 32 फीसदी तक बढ़ोतरी देखी गई। इसका खुलासा फाइनेंशियल सर्विसेज कंपनी रेजर पे ने अपनी रिपोर्ट "एरा ऑफ राइजिंग फिनटेक" के छठे संस्करण के हिस्से के तौर पर 'कोरोना काल के 101 दिन: डिजिटल पेमेंट पर प्रभाव' शीर्षक से जारी स्पेशल रिपोर्ट में किया है [5]। देखा जाए तो भारत में इसकी सफलता निश्चित रूप से किसी प्रभावशाली उपलब्धि से कम नहीं है, जो कि कोरोना काल में कम होने के बजाय और विस्तृत हुई है।

3.2 सामाजिक चुनौतियां

ऑनलाइन डेटिंग ऐप्स के माध्यम से डेटिंग का प्रचलन काफी तेजी से युवाओं के बीच बढ़ रहा है। अजनबी लोगों से बात करना तथा किसी के साथ डेटिंग करना भी आज तकनीकी की वजह से ही संभव है। ऐसे में इसका इस्तेमाल करने वाले लोगों की निजता की सुरक्षा पर भी कभी-कभी सवाल उठते हैं। इन प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करने वाले लोगों से साथ साइबर क्राइम की संभावना भी अधिक होती है। फ्रॉड करने वाले लोग इन साइटों पर अवैध अकाउंट बनाकर लोगों से पैसे उगाहने का काम करते हैं। यह लोग भोले-भाले किस्म के लोगों की पहचान कर उन्हें अपना शिकार बनाते हैं।

चूंकि ऑनलाइन डेटिंग का उपयोग करते समय व्यक्ति को अपने बारे में काफी जानकारियां देनी पड़ती हैं। कई बार आवश्यकता से अधिक जानकारी देना व्यक्ति को परेशानी में डाल देता है। इसके अलावा डेटिंग साइट को चुनते वक्त की गई लापरवाही भी खतरनाक साबित हो सकती है क्योंकि तमाम साइट्स ऐसी होती हैं जो व्यक्ति को फेसबुक साइट से लॉग-इन करवाकर प्वाइंट्स देती हैं। ऐसी स्थिति में निजता की रक्षा करना एक बड़ी चुनौती होती है। क्योंकि व्यक्ति की निजता पर खतरा बना रहता है।

साथ ही सोशल मीडिया की इस आधुनिक दुनिया ने सामाजिक और पारिवारिक रिश्तों में सेंध लगाई है। असल दुनिया में संवाद की कमी और आभासी संसार में बीत रहा समय, रिश्तों में असंतोष पैदा कर रहा है। वर्तमान समय में ऑनलाइन डेटिंग से बने संबंधों के प्रचलन के कारण ही आज समाज में प्रेम संबंधों के औचित्य पर प्रश्न चिह्न लग चुका है। अक्सर ऐसा माना जाता है कि युवा किसी एक के साथ बंध कर नहीं रहना चाहते और अपनी सहूलियत के अनुसार संबंध रखना चाहते हैं इसीलिए उन्हें शॉर्ट टाइम संबंध ज्यादा आकर्षित करते हैं। वहीं अगर किसी कारणवश संबंध-

विच्छेद हो जाए तो युवा इन संबंधों के टूटने का दुख नहीं मनाते और ना ही उन्हें ठीक करने एवं समय देने का अधिक प्रयास करते हैं बल्कि नई खोज शुरू कर देते हैं। आभासी दुनिया की तथाकथित सामाजिकता ने हमें वास्तविक दुनिया में सामाजिक रूप से हाशिए पर धकेल दिया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऑनलाइन दुनिया की व्यस्तता की वजह से व्यक्ति अपने रिश्तों के प्रति ही नहीं, पारिवारिक और सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के सम्मान में भी लगातार कमी आ रही है। सहयोग, संरक्षण और स्नेह का भाव खत्म होता जा रहा है। यह सामाजिक व्यवस्था के लिए एक बड़ी चुनौती है।

3.3 निष्कर्ष

पहली दृष्टि में देखा जाए तो टिंडर और भारत का मेल कुछ अटपटा सा नज़र आता है। आखिरकार भारत एक ऐसा देश माना जाता है जहां 90 फीसदी विवाह परिवार द्वारा तय किए जाते हैं फिर भी जैसे-जैसे सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है, ऑनलाइन डेटिंग अधिक स्वीकार्य होती जा रही है विशेष रूप से युवा पीढ़ी के बीच जो देश की आधी आबादी कहलाती है, क्योंकि टिंडर उसे उसका साथी खोजने में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर देता है। आज व्यस्त दिनचर्या और काम की अधिकता के बीच समय ना मिल पाने के कारण व्यक्ति भौतिक रूप से नहीं मिल पता। इसीलिए इंटरनेट चैटिंग की सहायता से वह आसानी से एक-दूसरे से संपर्क कर लेते हैं। किंतु साथ ही यदि आधुनिक डेटिंग की राह में व्याप्त वर्तमान सामाजिक चुनौतियों को अनदेखा करने का प्रयास किया गया तो यह समाज के लिए एक गंभीर परेशानी का सबब बन सकती है।

अध्याय-चतुर्थ

ऑनलाइन डेटिंग (टिंडर के संदर्भ में)

4.1 ऑनलाइन डेटिंग के फायदे

यह एक ऐसा मंच है जहां व्यक्ति के पास मित्रता और डेटिंग के कई विकल्प उपलब्ध हैं। लोगों को यहां नए-नए दोस्त बनाना अच्छा लगता है। अगर कोई किसी से कुछ समय तक बात करते-करते ऊब जाए अथवा उसकी रूचि ख़त्म हो जाए तो वह उसे छोड़ सकता है। क्योंकि यहां बहुत अधिक लोग मिलते हैं, जिनको जानने समझने का मौका मिलता है। इससे व्यक्ति का संचार कौशल बेहतर तथा मजबूत होता है जिससे उसमें आत्मविश्वास पैदा होता है। अक्सर लोगों को नई चीजें प्रभावित करती हैं। उन्हें प्यार और सुकून देने वाले रिश्ते पसंद आते हैं। वह अपनी खुशी के लिए बहुत सी नई चीजें करना चाहते हैं। जैसे- नए दोस्त बनाना, किसी से अपनी बातें साझा करना, किसी के साथ समय बिताना इत्यादि। जो ऑनलाइन डेटिंग में उसे आसानी से मिल जाता है। इस प्रकार की डेटिंग व्यक्ति को आज के वक्त में उसकी व्यस्त दिनचर्या में सुलभता प्रदान करती है वह जॉब करता है या सीरियस पढाई करता है जिसके कारण उसे बाहर जाने का मौका नहीं मिलता है लेकिन यदि उसे ऐसा पार्टनर चाहिए जो उसे समझ सके तथा उसके साथ रोमेंटिक डेट कर सके, अपने दिल की बात बता सकें। इन सभी के लिए उसे बिना अधिक समय गवाएं कहीं भी बाहर जाने की आवश्यकता नहीं होती है। कई लोग ऑनलाइन डेटिंग के जरिए जीवन की संभावनाओं तथा अवसरों को बढ़ाने के लिए अपना नेटवर्क भी मजबूत करते हैं।

यहां लोग अपनी सेक्सुअलिटी के बारे में खुलकर बात कर पाते हैं क्योंकि हो सकता है कि बाहरी दुनिया या समाज में उन्हें इस विषय पर कोई जज करे, लेकिन टिंडर जैसे डेटिंग ऐप्स पर लोग खुलकर अपनी यौनिक इच्छाओं के बारे में एक दूसरे से बात कर पाते हैं। यह सब डेटिंग ऐप के माध्यम से ही संभव हो पाया है। यहां व्यक्ति को अलग-अलग पृष्ठभूमि व अनुभव वाले लोग मिल जाते हैं। यहां वे लोग भी सहज महसूस करते हैं जो बाहरी दुनिया में अंतर्मुखी होते हैं, लोग परस्पर अपनी-अपनी आवश्यकताओं के बारे में बिना झिझके विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। डेटिंग की यह प्रणाली व्यक्ति को अपने साथी का चुनाव करने से पूर्व उसके बारे में जान लेने का अवसर देती है। टिंडर जैसे प्लेटफॉर्म्स में ऑनलाइन डेटिंग से आधुनिक समय में अच्छा दोस्त मिल सकता है और भावनात्मक ब्रेकडाउन में व्यक्ति को सहारा भी मिल सकता है।

4.2 ऑनलाइन डेटिंग के नुकसान

इन दिनों युवाओं में डेटिंग ऐप्स का चलन तेजी से बढ़ रहा है। ऑनलाइन डेटिंग में मिले पार्टनर व्यक्ति के लिए कई बार सिर दर्द बन जाते हैं। कई बार इसके चलते लोग धोखे का शिकार हो जाते हैं और यह उनके मानसिक तनाव का कारण भी बन जाता है। इसी के साथ लगातार मोबाइल पर लगे रहना व्यक्ति के निजी जीवन तथा रिश्तों को भी कहीं न कहीं प्रभावित कर सकता है। कई लोग परिवार और दोस्तों से भी दूर हो जाते हैं। इस दौरान लगातार इन ऐप्स पर लगे रहना उनकी आंखों और मस्तिष्क को सक्रिय रखता है, जो कि इसे थका देता है और इसका व्यक्ति के काम या पढ़ाई पर नकारात्मक असर पड़ता है। वहीं ऑनलाइन डेटिंग में मिले साथी के विकल्प भी भ्रामक हो सकते हैं। एक स्पष्ट योजना के बिना ऑनलाइन डेट करना वास्तव में एक

संतोषजनक संबंध की शुरूआत करने के बजाय लोगों को भटका सकता है। अक्सर इन प्लेटफॉर्म्स पर सबसे ज्यादा झूठ बोला जाता है, गलत जानकारी साझा की जाती है। ब्लैकमेलिंग और कैटफ़िशिंग जैसी गतिविधियों का भी डर बना रहता है। कई लोगों की ऐसी शिकायत होती है कि डेटिंग ऐप्स पर कुछ लोग फ़ेक प्रोफाइल बना लेते हैं। तथा अपनी उम्र, असली तस्वीर, पहचान, हैसियत के बारे में झूठ बोलते हैं। वहीं शॉर्ट टर्म रिलेशन यानी कुछ ही समय के लिए चलने वाले संबंध दिमाग़ी स्वास्थ्य पर बुरा असर डालते हैं जो कि टिंडर जैसे ऐप्स पर खूब चलन में है। खराब स्तर की बातचीत, डेट्स और रिश्तों से अक्सर व्यक्ति दिमागी रूप से थक जाता है। साथ ही कई बार लोग दिन रात राइट-स्वाइप लेफ्ट-स्वाइप कर करके हताश हो जाते हैं और एक जाल में उलझते जाते हैं क्योंकि डेटिंग ऐप का अधिक प्रयोग भी एक लत बन जाता है [6]।

टिंडर इत्यादि पर की जाने वाली दोस्ती कई बार लोगों को महंगी पड़ती है, जिसमें धोखे से उनकी जेब काट ली जाती है। ऑनलाइन डेटिंग सर्विस और ऐप के बढ़ते प्रचलन के साथ-साथ इसका प्रयोग करने वाले भारतीय लड़के-लड़कियां इन प्लेटफार्म पर सुरक्षा संबंधी समस्याओं का सामना कर रहे हैं, क्योंकि ऐसे प्लेटफॉर्म साइबर अपराधियों का पसंदीदा ठिकाना होते हैं। हालांकि यह ऐप व्यक्ति की वास्तविक पहचान छुपाते हुए ऑनलाइन डेटिंग का दावा करते हैं, लेकिन इन पर उनकी पहचान पूरी तरह छिपी नहीं रहती है और वह पीछा किए जाने, पहचान चोरी हो जाने, उत्पीड़ित होने, कैटफिशिंग और फिशिंग घोटालों के शिकार हो सकते हैं।

4.3 निष्कर्ष

आधुनिकता ने जहां मानव जीवन को सरल एवं रोचक बनाया है वहीं उसे जटिल बनाने का कार्य भी किया है। पहले ऑनलाइन डेटिंग सिर्फ महानगरों तक सीमित थी। छोटे शहरों में इसके बारे में लोग जानते तक भी नहीं थे। लोग इसकी चर्चा करने से भी कतराते थे। लेकिन अब इंटरनेट के प्रसार एवं सोशल मीडिया के उभार के चलते टिंडर जैसे ऐप शहरों से लेकर गांवों में भी प्रयोग किए जा रहे हैं। तकनीकी के इस युग में लोग इंटरनेट के दीवाने है, उन्हें वर्चुअल जिंदगी अधिक पसंद आने लगी है तथा अब लोगों को वर्चुअल जिंदगी में ही प्यार भी हो जाता है और कई लोग शादी भी कर लेते हैं। ऑनलाइन डेटिंग के फायदे और नुकसान व्यक्ति से व्यक्ति अलग-अलग हो सकते हैं कई लोग ऐसे मिल जाएंगे जिन्होंने डेटिंग ऐप्स के जरिए अपने पार्टनर को पा लिया और वह खुश हैं, वहीं कई लोगों को धोखा भी मिल चुका है। ऑनलाइन डेंटिग करने से पहले व्यक्ति को इन दोनों ही पक्षों पर ध्यान देना होता है, तभी उसका उद्देश्य सार्थक साबित होता है। साथ ही इसे एक ऐसी गतिविधि के रूप में भी देखा जाता है जिसमें तमाम सावधानियां रखने के बावजूद, स्वयं अर्जित अनुभव से ही व्यक्ति के भीतर समझ विकसित हो सकती है।

अध्याय-पंचम्

आधुनिक डेटिंग की शब्दावली

डेटिंग के इस आधुनिक युग में प्रेम का शब्दकोश कई गुना बढ़ चुका है। वयस्क होने जा रही वर्तमान पीढ़ी अब प्यार को कहीं ज्यादा व्यवहारिक एवं खुले नजरिए से देखती व समझती है। इसलिए इंटरनेट पर होने वाली मोहब्बत के हर पड़ाव को इसने नए-नए नाम दे दिए हैं। अब प्यार में खुशी, इंतजार, डर, असुरक्षा यहां तक कि वक्त को भी उनके हिस्से के नाम मिल चुके हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्यार में यह रंग हमेशा से मौजूद रहे हैं और हम सभी इन्हें पहचानते भी हैं। लेकिन अगर इस पहचान को किसी नाम से जानने की कोशिश की जाए तो आधुनिक प्रेम-चलन की यह शब्दावली कुछ इस प्रकार देखी जा सकती है [7] –

1) कुशनिंग और बेंचिंग (Cushioning and Benching)

डेटिंग के दौरान लोग हमेशा सामने वाले को परख रहे होते हैं, यानी उस वक्त उन्हें यह पता नहीं होता कि वे इस व्यक्ति के साथ रिलेशनशिप में जाने वाले हैं या नहीं। ऐसे में एक व्यक्ति को डेट करते समय जब कोई अपने पास दूसरे विकल्प भी तैयार रखता है तो इसे कुशनिंग कहा जाता है। यहां पहले व्यक्ति से मिलने वाले रिजेक्शन के झटके को बर्दाश्त करने के लिए किसी तीसरे को कुशन की तरह इस्तेमाल किया जाता है और पहले से रिश्ता न बनने की स्थिति में इस तीसरे व्यक्ति के साथ आगे बढ़ा जाता है। यह सब घटने के दौरान तीसरे व्यक्ति की स्थिति बेंचिंग कहलाती है। अर्थात, यह वैसी ही व्यवस्था है जहां अपनी बारी का इंतजार करने के लिए लोग बेंच पर बैठकर इंतजार करते हैं।

2) कफिंग और अनकफिंग सीजन (Cuffing and Uncuffing seasons)

कुछ लोग केवल सर्दियां आने पर रिलेशनशिप रखना पसंद करते हैं। भारतीय मूल्यों के अनुसार यह बड़ी वाहियात बात लग सकती है, लेकिन कुछ लोग गर्माहट के लिए गरम पानी की बॉटल या सिगड़ी के बजाय सर्दियों में इंसानों का सहारा लेना पसंद करते हैं। सर्दियों की शुरुआत में इस तरह के रिलेशनशिप बनने शुरू होते हैं इसलिए उसे कफिंग सीजन कहते हैं। वहीं सर्दियां खत्म होने के साथ ही इन रिश्तों की जरूरत भी खत्म होने लगती है। तब इसे अनकफिंग सीजन कहा जाता है। इस तरह के रिलेशनशिप में जाने वालों को सलाह दी जाती है कि वह पहले ही अपने इरादे बता दें कि यह बिल्कुल थोड़े समय के लिए रखा जाने वाला रिश्ता होगा और ठंड का मौसम जाते ही दोनों के रास्ते अलग-अलग होंगे।

3) गैसलाइटिंग (Gaslighting)

किसी जोड़े में अगर कोई पार्टनर थोड़ा चतुर है तो वह बहुत आसानी से अपनी गलतियां भी सामने वाले के सिर पर थोप सकता है। गैसलाइटिंग से मतलब है कि पार्टनर को इस तरह समझाना या ब्रेनवॉश करना कि विक्टिम होते हुए भी उसे अपने ऊपर ही शक हो और उसे अपनी समझ और क्षमताओं पर ही संशय हो जाए। गैसलाइटिंग करने वाला व्यक्ति लगातार अपने पार्टनर से झूठ बोलता है और बाद में घुमा-फिराकर उसे ही गलत साबित कर देता है। ऐसा लगातार होने पर पार्टनर अपना आत्मविश्वास खोता चला जाता है। इसके बाद पहला व्यक्ति उसे झूठे दिलासे देकर उसे यह एहसास दिलाने की कोशिश करता है कि वही उसका सबसे बड़ा सहारा है। अक्सर लोग अपने साथी पर नियत्रंण रखने के लिए गैसलाइटिंग का सहारा लेते हैं।

4) ब्रेड क्रंबिंग (Bread crumbing)

जिस प्रकार ब्रेड का पैकेट खत्म होने के बाद उसकी तली में बचा हुआ ब्रेड का चूरा अंग्रेज़ी में ब्रेड क्रंबिंग कहलाता है। वहीं रिलेशनशिप के मामले में इसे दिल का चूरा माना जाता है। यह प्रेम संबंधों का वह रूप है जब कोई व्यक्ति अपने पार्टनर को सिर्फ इतना महत्व देता है कि उसे यह लगता रहे कि यह रिलेशनशिप अभी खत्म नहीं हुई है। उदाहरण के लिए वह देर रात मैसेज के जवाब दे देता हो, कभी-कभार फोन पर बात कर लेता हो। अक्सर ब्रेड क्रंबिंग करते हुए लोग अपने पार्टनर से किसी भी तरह का कमिटमेंट करने में झिझकते हैं, लेकिन पूरी तरह से रिश्ता खत्म भी नहीं करते हैं। ऐसा करने वाले लोग कभी दूसरों को यह नहीं दिखाना चाहते कि वह किसके साथ हैं।

5) डीप लाइकिंग (Deep liking)

डीप लाइकिंग का अर्थ दिल की गहराइयों से लाइक करने से बिल्कुल नहीं होता है। जब कोई किसी के सोशल मीडिया प्रोफाइल पर जाकर उसकी बहुत पुरानी तस्वीरें और पोस्ट लाइक करता है तो इसे डीप लाइकिंग कहा जाता है। यह क्रिया सामने वाले व्यक्ति तक यह संदेश पहुंचाने के लिए इस्तेमाल की जाती है कि कोई आपको पसंद कर रहा है।

6) ब्रीजिंग और डीटीआर (Breezing and DTR)

ब्रीजिंग ट्रेंड का अनुसरण कर रहे लोग बेफिक्र किस्म के प्रेमी होते है। इस दौरान लोग अपने साथी को लेकर किसी तरह की चिंताएं नहीं पालते। इस प्रकार के लोग अपने आप में खुश और आत्मविश्वास से भरपूर होते हैं। इस तरह के लोगों से बात करना सहज होता है। कुल मिलाकर यह पार्टनर के साथ-साथ अपने साथ भी ईमानदार

होने वाले लोगों के लिए प्रयोग की जाने वाली टर्म है। ब्रीजिंग करते हुए जहां सभी बातें साफ-साफ रखी जाती हैं वहीं डीटीआर अस्पष्टता या दुविधा वाली स्थिति होती है। डीटीआर का फुल फॉर्म है- डिफाइन द रिलेशनशिप। जब एक जोड़े को यह समझ ना आ रहा हो कि उसके बीच दोस्ती है या प्यार, या फिर आगे जाकर उन्हें शादी करनी चाहिए या ब्रेकअप और तब वे इसका हल निकालने के लिए साथ बैठकर बातचीत करते हैं तो यही प्रक्रिया डीटीआर कहलाती है।

7) कैच एंड रिलीज (Catch and Release)

कुछ डेटर्स (डेट करने वाले) ऐसे होते हैं जिन्हें सिर्फ लोगों को चेज करने में मजा आता है। वे लोगों से बात करने की और उनसे रिश्ता बनाने की कोशिश करते दिखते हैं लेकिन जैसे ही सामने वाला उनमें दिलचस्पी लेने लगता है, वे उससे बोर हो जाते हैं और रिलेशनशिप खत्म कर देते हैं। ऐसे लोग अपने पार्टनर की पकड़ में आते ही उसे छोड़ देते हैं इसलिए ऐसी गतिविधि को कैच एंड रिलीज कहा जाता है।

8) घोस्टिंग-हॉन्टिंग और जॉम्बीइंग (Ghosting-Haunting and Zombieing)

अगर डेट करने वाले जोड़े में से कोई एक अचानक भूत की तरह गायब हो जाए और किसी भी तरह का कॉन्टेक्ट न रखे। फोन-मैसेज के जवाब देना बंद कर दे तो इसे घोस्टिंग कहा जाता है। अक्सर इसका आश्रय वह लोग लेते हैं जो पार्टनर के सामने आकर यह कहने में डरते हैं कि वे अब रिलेशनशिप को आगे नहीं ले जाना चाहते। इस तरह से अचानक गायब होने वाले लोग जब अचानक फिर से वापस आ जाते हैं तो इसे हॉन्टिंग कहा जाता है। हॉन्टिंग करने वाले सीधे सामने आने के बजाय सोशल मीडिया पर फॉलो करके अपनी उपस्थिति का आभास करवाते हैं। हॉन्टिंग करने वाले

ये एक्स लवर जब असल जिंदगी में घुसकर उसमें गड़बड़ियां मचाना शुरू कर देते हैं तथा ऐसे व्यवहार करते हैं मानो कुछ हुआ ही ना हो। वे अक्सर चाहते हैं कि किसी तरह पार्टनर का साथ दोबारा पा लिया जाए तो इसे जॉम्बीइंग कहते हैं [8]।

9) किटन फिशिंग (Kitten Fishing)

डेटिंग ऐप पर अपने बारे में गलत जानकारी देने वालों को किटन फिशर कहा जाता है। ऐसे लोग जब टिंडर जैसी वेबसाइटों पर अपना प्रोफाइल बनाते हैं तो उसमें अपने बारे में जरूरत से ज्यादा सकारात्मक बातें लिखते हैं या असंभव की हद तक सकारात्मक दिखने की कोशिश करते हैं। किटन फिशर्स अपना प्रोफेशन, कद अथवा रुचियां कुछ इस तरह रखते हैं जिससे वे हर किसी को एक आदर्श साथी लगें और लोग उनमें रुचि लें। चूंकि ये फंसाने का काम करते हैं सो इसे किटन फिशिंग कहा जाता है।

10) मंकीइंग और पिकॉकिंग (Monkeying and Peacocking)

पशु-पक्षियों की प्रवृत्ति पर आधारित और उन्हीं के नाम से पहचानी जाने वाली यह दोनों गतिविधि एक-दूसरे से एकदम अलग हैं। जैसे बंदर एक डाल से उछलकर दूसरी डाल पर पहुंच जाता है, इसी आधार पर अगर कोई व्यक्ति दो रिलेशनशिप के बीच में ब्रेक नहीं लेता तो इसे मंकीइंग कहा जाता है। पिकॉकिंग से तात्पर्य किसी को रिझाने की कोशिश करने से है। जैसे मोर अपने पंख फैलाकर मोरनी को रिझाने की कोशिश करता है, उसी तरह पिकॉकिंग करने वाले लोग हर समय सज-धजकर तैयार रहते हैं ताकि हर किसी का ध्यान उन पर जाए।

11) स्लो फेड (Slow Fade)

ऑनलाइन डेटिंग के दौरान लोग जब शुरू में तो चैट करते हुए किसी में खूब दिलचस्पी दिखाते हैं, लेकिन कुछ समय बाद बोरिंग बातें करने लगते हैं या सही तरीके से जवाब नहीं देते तो इसे स्लो फेड कहा जाता है। अक्सर वे लोग जो किसी को पसंद तो करते हैं, लेकिन किसी कमिटमेंट में नहीं पड़ना चाहते, स्लो फेड का सहारा लेते हैं। कई बार सामने वाले के पीछे पड़ जाने और किसी को भावनात्मक रूप से आहत न करने की इच्छा के कारण भी लोगों को स्लो फेड का सहारा लेना पड़ता है।

12) थर्स्ट ट्रैप (Thirst Trap)

सोशल मीडिया पर सेक्सी तस्वीरें अपलोड करना या ऐसे फ्लर्टी पोस्ट लिखना जो अधिक से अधिक लोगों का ध्यान खींच सकें, थर्स्ट ट्रैप कहलाता है। डेटिंग कपल्स के अलावा अकेलेपन का शिकार ज्यादातर लोग, खासकर लड़कियों द्वारा इसका खूब इस्तेमाल किया जाता है। लगातार लाइक्स और कमेंट्स मिलते रहने से उन्हें बेहद खास और सुंदर होने का एहसास होता है। डेटिंग कपल अपने पार्टनर का ध्यान खींचने के लिए ऐसी तस्वीरें भी पोस्ट करते हैं जिसमें वे अपने आप में बेहद खुश लग रहे हों।

अध्याय-षष्ठम्

डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' का सामाजिक प्रभाव

प्रश्नावली उपकरण से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण-

इस शोध-कार्य में कुल 100 लोगों से प्रश्नावली के माध्यम से प्राथमिक आंकड़े एकत्रित किए गए, जो कि वर्तमान में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में रह रहे हैं। उत्तरदाताओं का वर्गीकरण लिंग एवं उम्र के आधार पर किया गया है। प्रतिभागियों को पूर्व ही सूचित कर दिया गया था कि यह एक शैक्षिक शोध है, जिसके लिए उनका सहयोग चाहिए। प्रतिभागियों से केवल कार्यालय अवधि में ही संपर्क किया गया तथा यह आग्रह किया गया कि सभी प्रश्नों का उत्तर पूरी ईमानदारी व निष्ठा से दें। साथ ही, उन्हें यह भरोसा दिलाया गया कि उनके द्वारा दिए गए उत्तर को पूरी तरह गोपनीय रखा जाएगा। इस शोध में किसी भी प्रतिभागी का नाम नहीं पूछा गया और न ही किसी प्रकार की व्यक्तिगत जानकारी मांगी गई। इस अध्ययन के लिए ऑनलाइन गूगल फॉर्म की सहायता ली गई, इसमें शोध की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए तकनीकी सेटिंग की गई थी जिसके फलस्वरूप कोई उत्तरदाता एक से अधिक बार प्रश्नावली (फॉर्म) भरकर अपनी प्रतिक्रिया दर्ज नहीं कर सकता था।

आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण

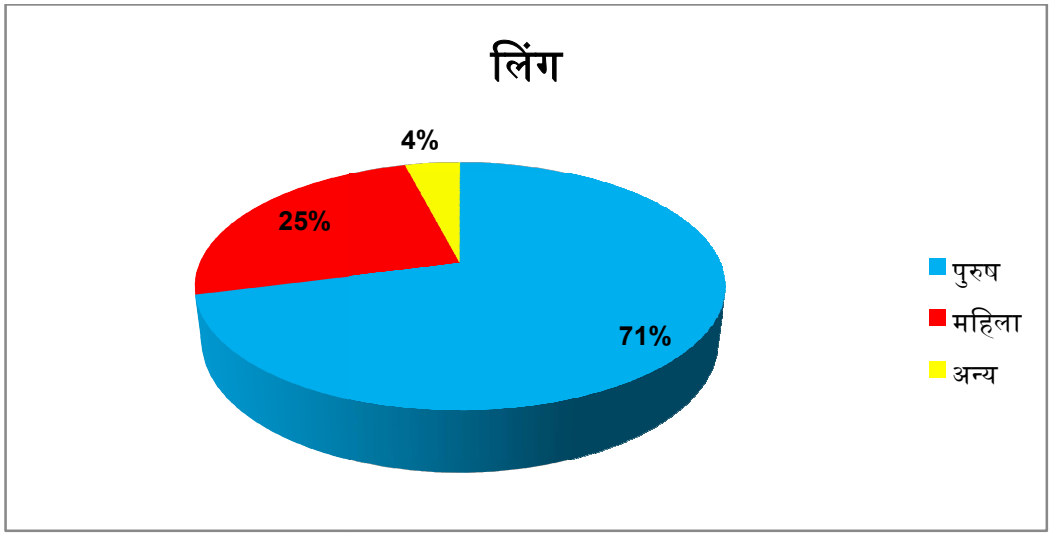

इस शोध में भाग लेने वाले प्रतिभागियों में 71% पुरुष, 25% महिलाएं और 4% अन्य शामिल हैं।

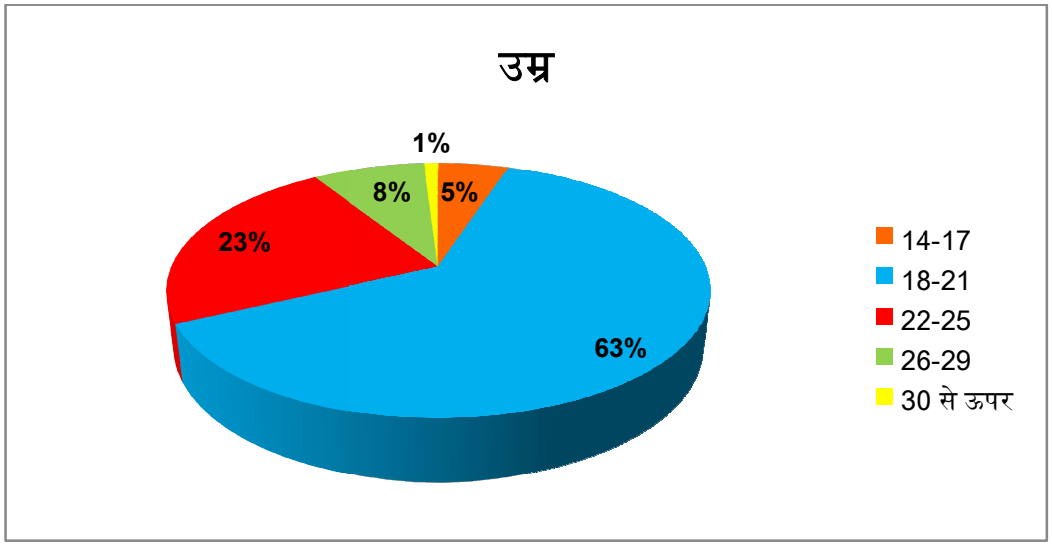

इस शोध में भाग लेने वाले प्रतिभागियों में 14-17 साल के 5%, 18-21 साल के 63%, 22-25 साल के 23%, 26-29 साल के 8% और 30 से ऊपर की उम्र के 1% लोग शामिल हुए।

प्रश्न.1 आप कितने समय से टिंडर का इस्तेमाल कर रहे हैं?

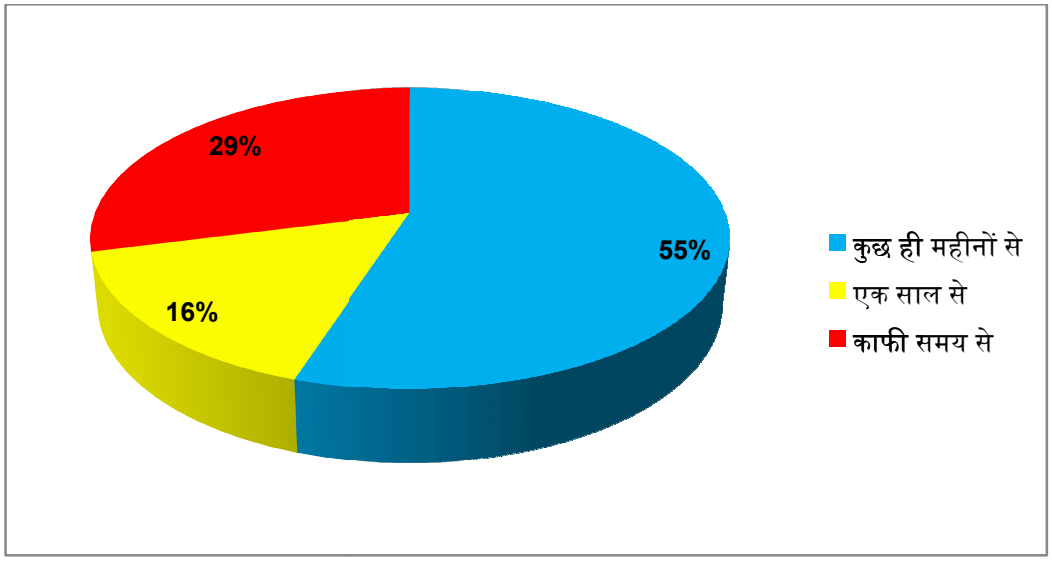

प्रश्न.2 आप टिंडर का इस्तेमाल क्यों करते हैं?

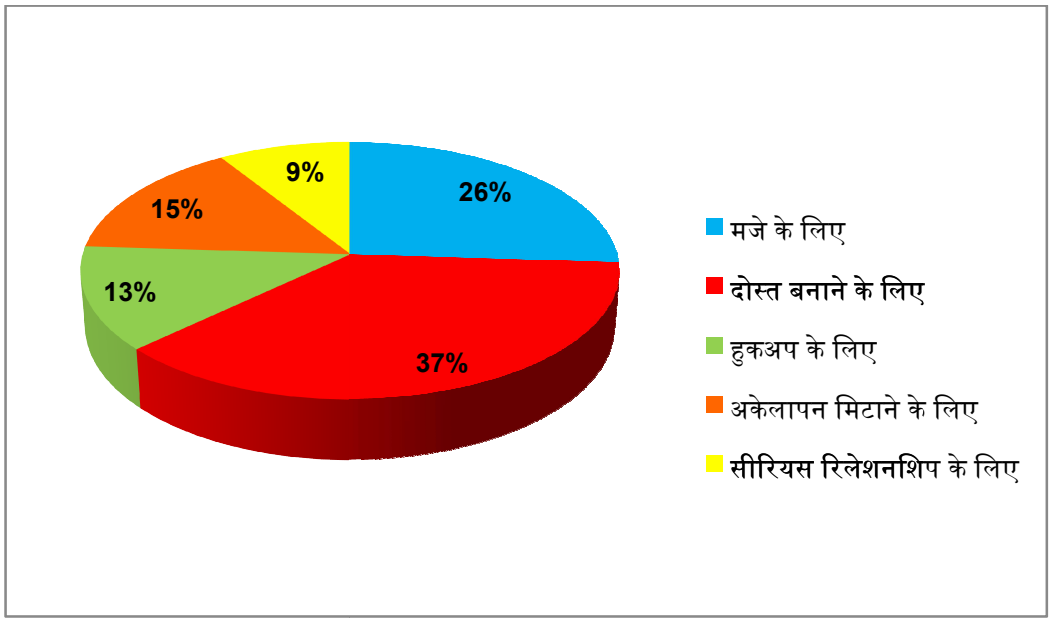

प्रश्न.3 आप टिंडर पर कैसे आए?

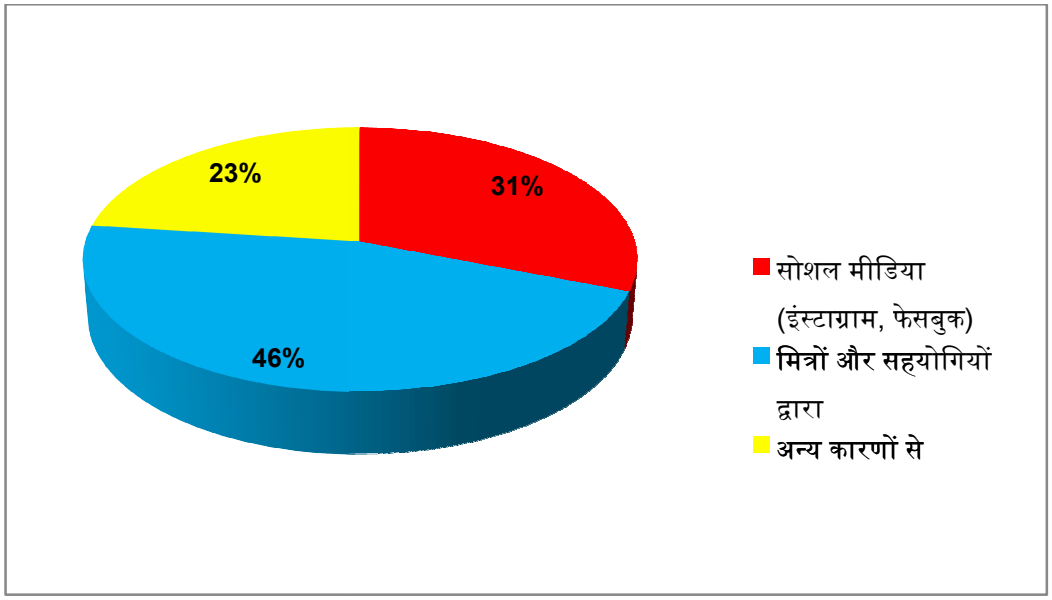

प्रश्न.4 आपकी प्राथमिकताएं क्या हैं?

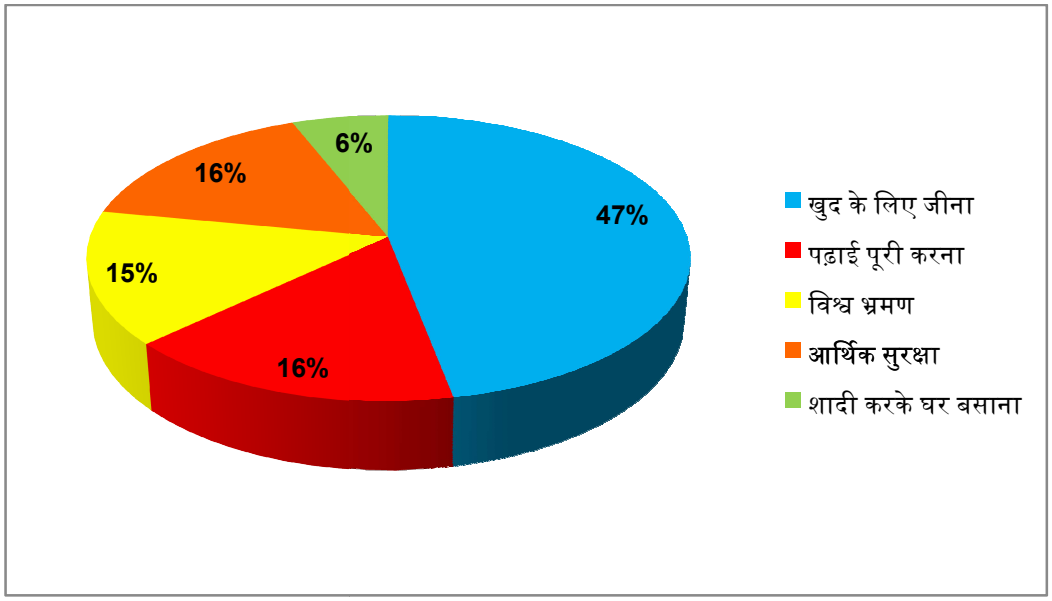

प्रश्न.5 आप टिंडर पर ज़्यादा सक्रिय किस समय होते हैं?

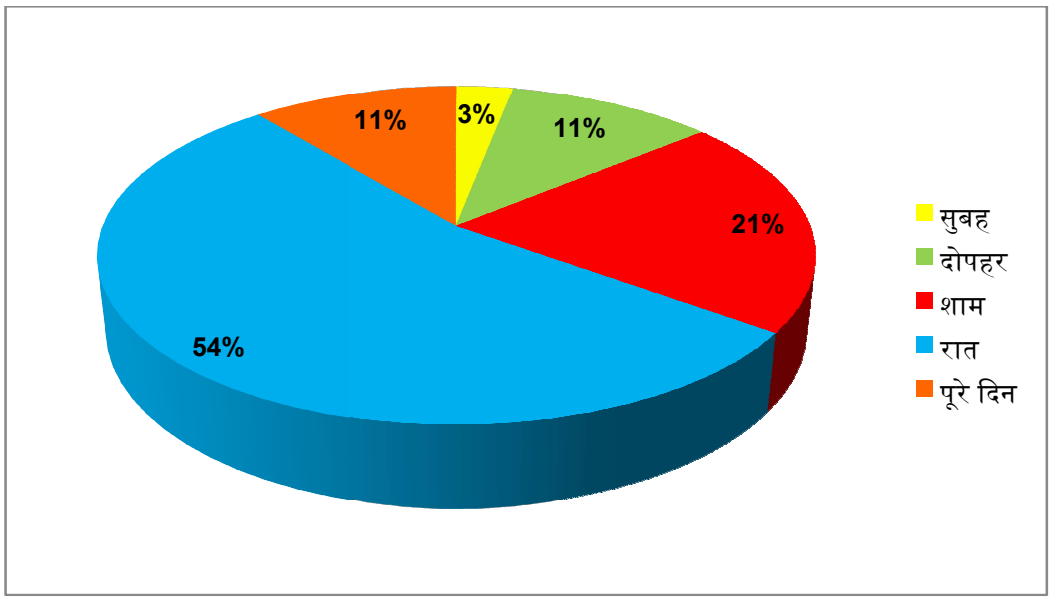

प्रश्न.6 क्या ऑनलाइन डेटिंग के लिए टिंडर एक सुरक्षित जगह है?

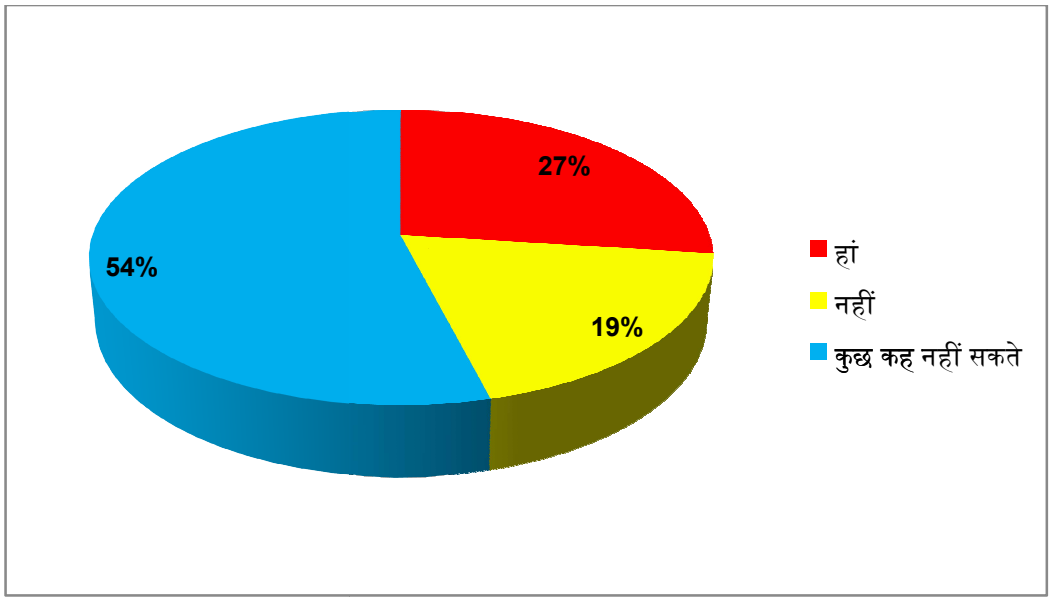

प्रश्न.7 क्या ऑनलाइन डेटिंग करना आपकी पढ़ाई, करियर और निजी जिंदगी पर बुरा असर डालता है?

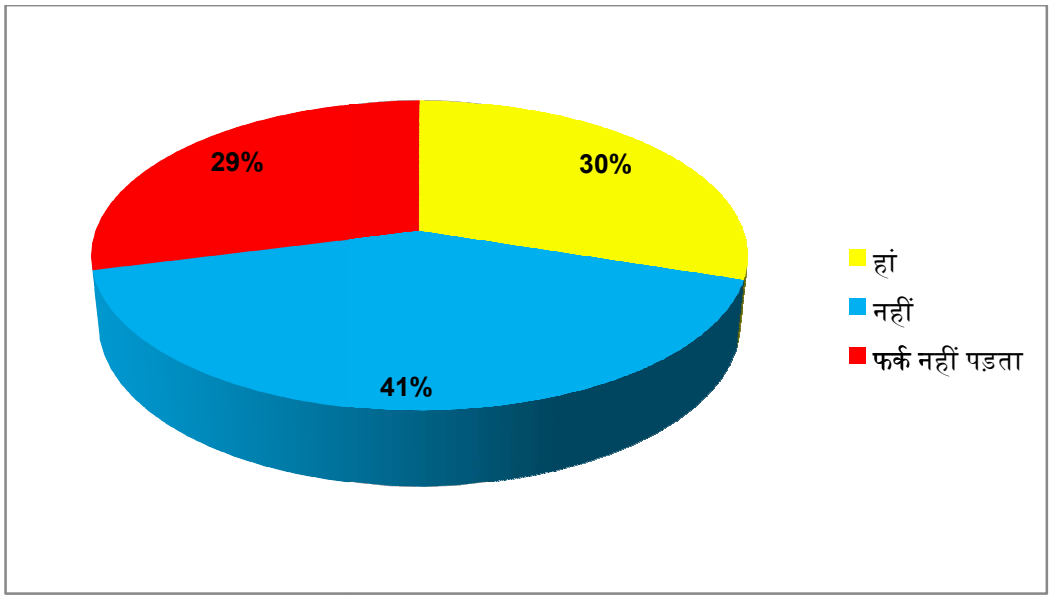

प्रश्न.8 टिंडर के इस्तेमाल से आपको क्या फायदा हुआ?

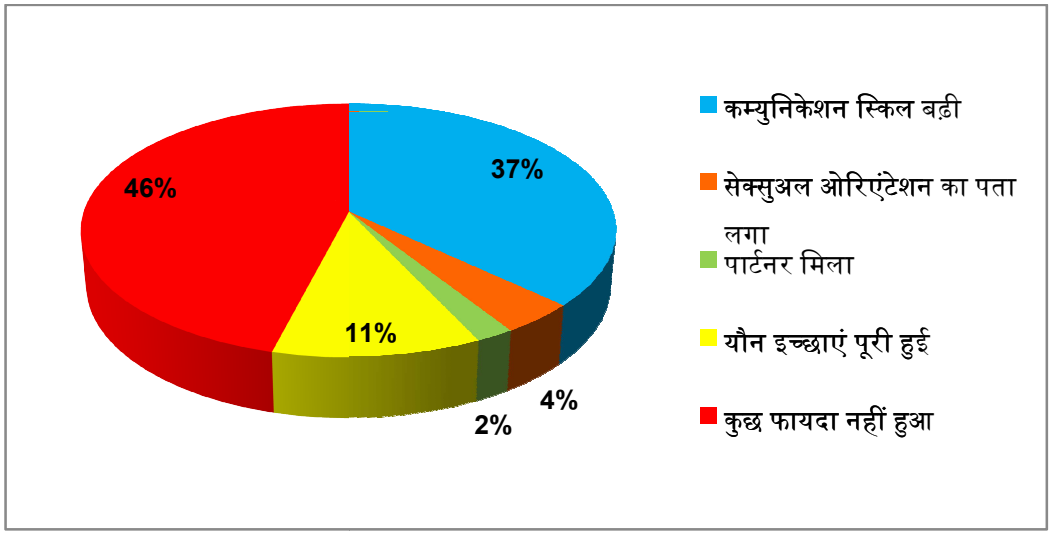

प्रश्न.9 क्या आपने कभी 'टिंडर प्लस' लिया है?

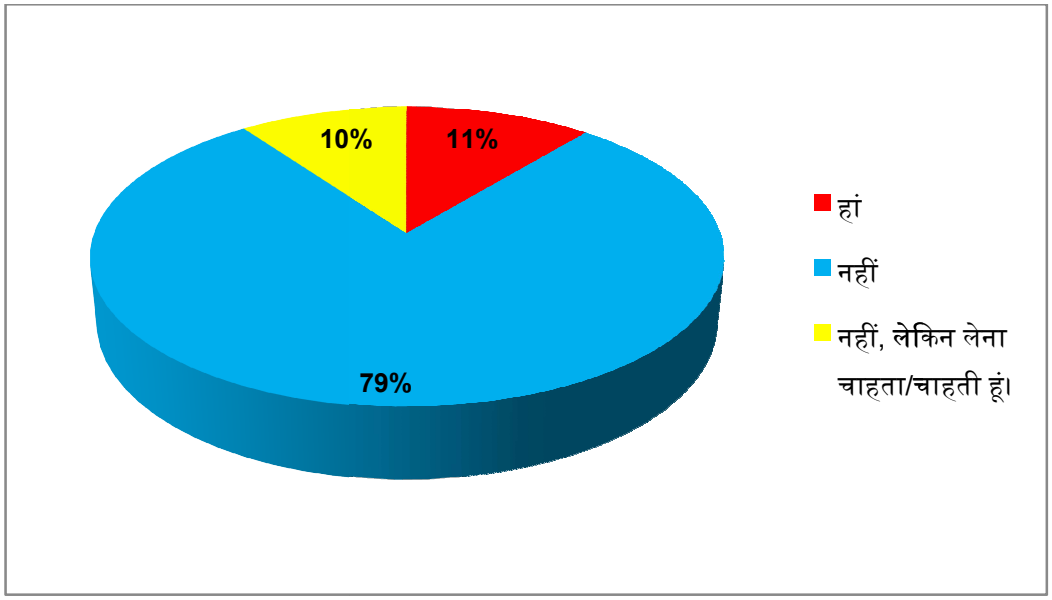

प्रश्न.10 क्या आपने कभी अपने दोस्तों, भाई-बहन आदि को टिंडर पर जाने के लिए प्रेरित किया है?

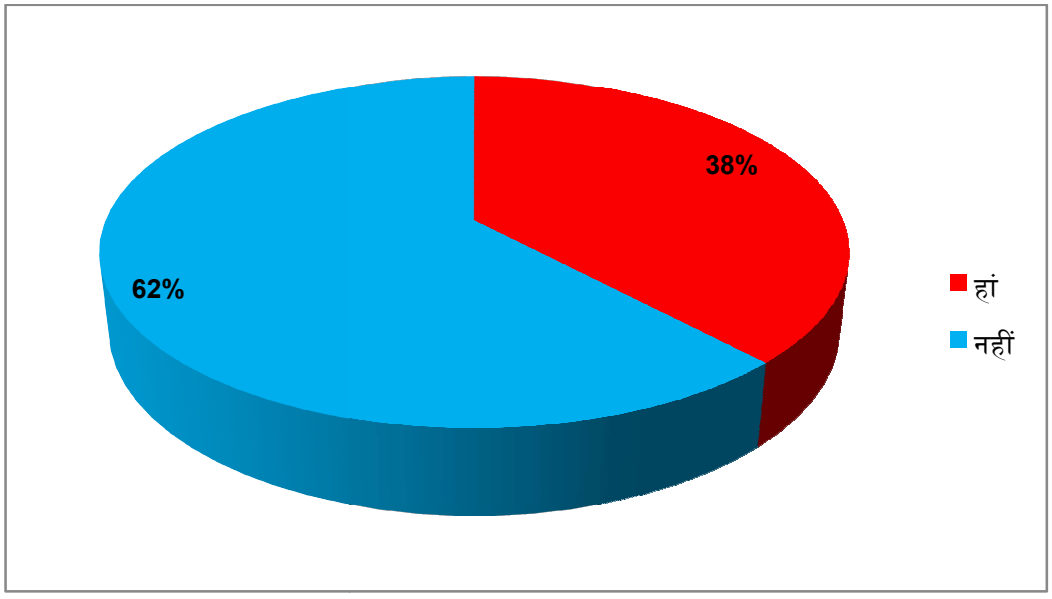

प्रश्न.11 टिंडर का इस्तेमाल करते समय क्या आपने कभी सुरक्षा संबंधी परेशानियों का सामना किया?

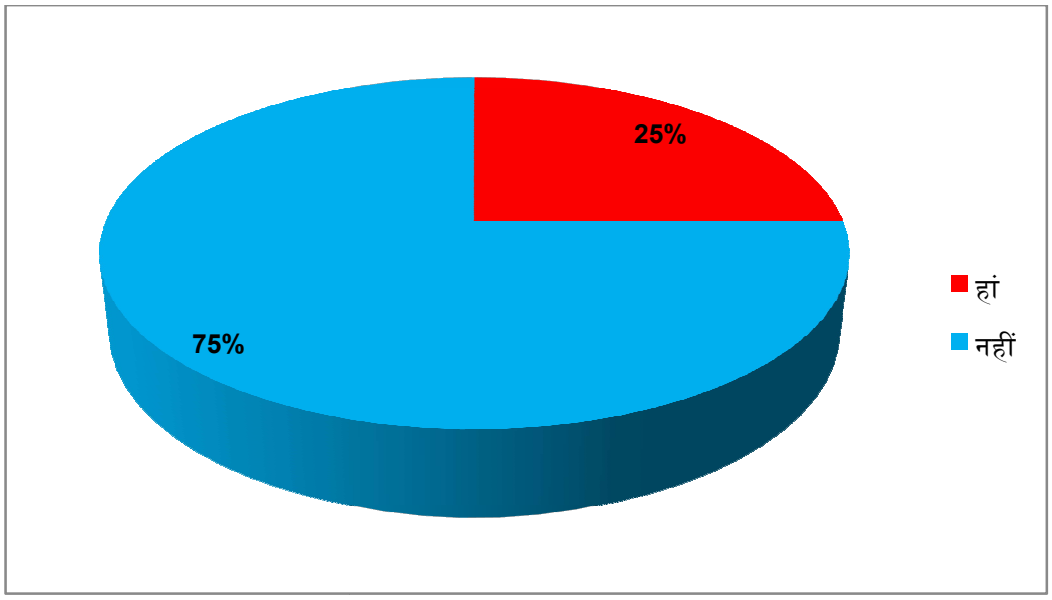

आंकड़ों का विश्लेषण

इस शोध में विषय से सम्बंधित सभी पहलुओं को छूने का प्रयास किया गया है। इस सर्वेक्षण में 100 लोगों से प्रश्नावली का उत्तर लिया गया जिनमें 71 प्रतिशत पुरुष, 25 प्रतिशत महिलाएं और 4 प्रतिशत अन्य शामिल हुए। इसमें 14-17 साल के 5 प्रतिशत, 18-21 साल के 63 प्रतिशत, 22-25 साल के 23 प्रतिशत, 26-29 साल के 8 प्रतिशत और 30 से ऊपर की उम्र के 1 प्रतिशत लोग शामिल हुए।

प्रश्नावली का पहला प्रश्न था कि 'आप कितने समय से टिंडर का इस्तेमाल कर रहे हैं?' इसमें 55 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा 'कुछ ही समय से', 29 प्रतिशत ने कहा

'काफी समय से' और वहीं 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना था 'एक साल से'। प्रश्नावली का दूसरा प्रश्न था, 'आप टिंडर का इस्तेमाल क्यों करते हैं?' इसमें 37 प्रतिशत प्रतिभागियों ने कहा 'दोस्त बनाने के लिए', 26 प्रतिशत ने कहा 'मजे के लिए', 15 प्रतिशत ने कहा 'अकेलापन मिटाने के लिए', 13 प्रतिशत ने कहा 'हुकअप के लिए' तथा 9 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना था कि 'सीरियस रिलेशनशिप के लिए' वे टिंडर का इस्तेमाल करते हैं। परिणामस्वरूप, शोध में अनुमानित की गई तीसरी परिकल्पना गलत साबित होती है जिसमें कहा गया है कि 'टिंडर एक सेक्स ऐप है। यह हुकअप के लिए पार्टनर्स को मिलवाने के लिए जाना जाता है।' क्योंकि सिर्फ 13 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि वह 'हुकअप के लिए' टिंडर का इस्तेमाल करते हैं। जबकि इससे अधिक संख्या में, 37 प्रतिशत उत्तरदाता 'दोस्त बनाने के लिए' और 26 प्रतिशत 'मजे के लिए' इसका उपयोग कर रहे हैं। प्रश्नावली में तीसरा प्रश्न पूछा गया कि 'आप टिंडर पर कैसे आए?', इसपर 46 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना था 'मित्रों और सहयोगियों द्वारा', 31 प्रतिशत ने कहा 'सोशल मीडिया (इंस्टाग्राम, फेसबुक)' द्वारा और वहीं 23 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'अन्य' वजहों का विकल्प चुना। 46 प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह कहना कि वे 'मित्रों और सहयोगियों द्वारा' टिंडर पर आए हैं, दर्शाता है कि यह ऐप समाज को कितना प्रभावित कर रहा है। लोग टिंडर का उपयोग तो कर ही रहे हैं, साथ ही अन्य लोगों को भी इसपर जाने का सुझाव दे रहे हैं। इसके द्वारा उनपर पड़ने वाला मानसिक तथा सामाजिक प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। प्रश्नावली में पूछा गया चौथा प्रश्न था कि

'आपकी प्राथमिकताएं क्या हैं?', इसमें 47 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा 'खुद के लिए जीना', 16 प्रतिशत ने कहा 'पढ़ाई पूरी करना', 16 प्रतिशत का कहना था 'आर्थिक सुरक्षा', 15 प्रतिशत ने 'विश्व भ्रमण' और 6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'शादी करके घर बसाना' अपनी प्राथमिकता बताया। परिणामस्वरुप, शोध में अनुमानित पांचवी परिकल्पना एकदम सही सिद्ध होती है जिसमें कहा गया है कि 'आज निजी स्वतंत्रता ज़्यादा अहम हो गई है, जिसके चलते युवाओं की पहली प्राथमिकता खुद के लिए जीना है।' क्योंकि 47 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस उत्तर का चुनाव किया है। जबकि 'पढ़ाई पूरी करना' ही नहीं बल्कि 'आर्थिक सुरक्षा' जैसा अहम पहलू भी युवाओं की प्राथमिकताओं से दूर जा रहा है। यहां तक कि शादी करके घर बसाने की सोच के बजाय लोगों में खुद के लिए जीने का नया चलन दिख रहा है। यह सभी बिंदु समाज पर पड़ने वाले प्रभावों की ओर स्पष्ट संकेत करते नज़र आ रहे हैं। पांचवा प्रश्न था, 'आप टिंडर पर ज़्यादा सक्रिय किस समय होते हैं?' इसपर 54 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'रात' का विकल्प चुना, 21 प्रतिशत ने 'शाम', 11 प्रतिशत ने 'दोपहर', वहीं 11 प्रतिशत ने 'पूरे दिन' और 3 प्रतिशत ने 'सुबह' को टिंडर पर ज़्यादा सक्रिय होने की बात कही। उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया से उनपर पड़ने वाला प्रभाव ज़ाहिर हो रहा है जो यह बताता है कि 54 प्रतिशत लोग रात में टिंडर पर अधिक सक्रिय होते हैं। क्योंकि पूरे दिन अलग-अलग कार्यों व गतिविधियों में व्यस्त रहने के बाद प्रायः लोग रात का समय मन की शांति पाने एवं दिनभर की थकान दूर करने के लिए बिताना पसंद करते हैं। ऐसे में इस समय उनके द्वारा टिंडर का अधिक प्रयोग करना अपने आप उसके प्रभाव व उनपर पड़ने वाले असर को दिखा रहा है। प्रश्नावली में पूछा गया

छठा प्रश्न था, 'क्या ऑनलाइन डेटिंग के लिए टिंडर एक सुरक्षित जगह है?', जिसपर 27 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'हां' पर अपनी प्रतिक्रिया दी, 19 प्रतिशत ने 'नहीं', तथा 54 प्रतिशत ने 'कुछ कह नहीं सकते' का विकल्प चुना। प्रश्नावली का सातवां प्रश्न था, 'क्या ऑनलाइन डेटिंग करना आपकी पढ़ाई, करियर और निजी जिंदगी पर बुरा असर डालता है?', इसमें 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना था 'हां', 41 प्रतिशत का कहना था 'नहीं' और 29 प्रतिशत ने 'फर्क नहीं पड़ता' की बात कही। उत्तरदाताओं के माध्यम से प्राप्त इस तथ्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें ऐसा नहीं लगता है कि ऑनलाइन डेटिंग करना उनकी पढ़ाई, करियर और निजी जिंदगी पर बुरा असर डालता है क्योंकि 41 प्रतिशत उत्तरदाताओं का ऐसा मानना है। फलस्वरूप, शोध में अनुमानित दूसरी परिकल्पना गलत साबित होती है, जिसमें कहा गया है कि 'ऑनलाइन डेटिंग करना निजी जिंदगी पर बुरा असर डालता है।' आठवें प्रश्न में प्रतिभागियों से पूछा गया कि 'टिंडर के इस्तेमाल से आपको क्या फायदा हुआ?' जिसमें 37 प्रतिशत ने कहा कि उनकी 'कम्युनिकेशन स्किल बढ़ी', 11 प्रतिशत ने कहा 'यौन इच्छाएं पूरी हुई', 4 प्रतिशत ने कहा 'सेक्सुअल ओरिएंटेशन का पता लगा', 2 प्रतिशत ने 'पार्टनर मिला' की बात कही और वहीं 46 प्रतिशत ने कहा कि उन्हें 'कुछ फायदा नहीं हुआ'। इस उत्तर में भी शोध के अंतर्गत अनुमानित की गई तीसरी परिकल्पना एक बार फिर गलत साबित होती है जिसमें यह कहा गया है कि 'टिंडर एक 'सेक्स ऐप' है। यह हुकअप के लिए पार्टनर्स को मिलवाने के लिए जाना जाता है।' क्योंकि उत्तरदाताओं में से सिर्फ 11 प्रतिशत लोगों का कहना है कि इसके

द्वारा उनकी यौन इच्छाएं पूरी हुई हैं। अतः इस उत्तर के माध्यम से टिंडर के 'सेक्स ऐप' होने की भ्रांति टूटी है। वहीं साथ ही इस प्रश्न के माध्यम से शोध में अनुमानित चौथी परिकल्पना एकदम सही साबित होती है जिसमें कहा गया है कि 'टिंडर के उपयोग से व्यक्ति की कम्युनिकेशन स्किल में इजाफा होता है।' क्योंकि 37 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा मानते हैं कि इसके इस्तेमाल से उनकी कम्युनिकेशन स्किल बढ़ी है। परिणामस्वरूप उनके ऊपर पड़ने वाला प्रभाव स्पष्ट रेखांकित होता है। प्रश्नावली में पूछा गया नवां प्रश्न था, 'क्या आपने कभी 'टिंडर प्लस' लिया है?', इसकी प्रतिक्रिया में 79 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'नहीं' का विकल्प चुना, 11 प्रतिशत ने 'हां' और 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा 'नहीं, लेकिन लेना चाहता/चाहती हूं'। इस प्रश्न के माध्यम से लोगों पर पड़ने वाला आर्थिक प्रभाव भी ज़ाहिर होता है क्योंकि 79 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिन्होंने कभी 'टिंडर प्लस' नहीं लिया है। इसका अर्थ यह है कि लोग अधिक फीचर्स का लाभ उठाने के लिए धन खर्च करने के बजाय फ्री में टिंडर का उपयोग करना ज़्यादा पसंद करते हैं। इससे उनपर आर्थिक दबाव नहीं पड़ रहा है। साथ ही, 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह कहना कि वे 'टिंडर प्लस' की सदस्यता लेना चाहते हैं, उसपर पड़ने वाले आकर्षक व लुभावने टिंडर के विज्ञापन तथा ऐप के प्रति लोगों के मन में स्थापित भरोसे को कहीं न कहीं उजागर करता है। प्रश्नावली में पूछा गया दसवां प्रश्न था कि 'क्या आपने कभी अपने दोस्तों, भाई-बहन आदि को टिंडर पर जाने के लिए प्रेरित किया है?' इसके उत्तर में 38 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'हां' कहा और वहीं 62 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने विकल्प के तौर पर 'नहीं' का चयन किया। प्रश्नावली का ग्यारहवां व अंतिम प्रश्न था कि 'टिंडर का

इस्तेमाल करते समय क्या आपने कभी सुरक्षा संबंधी परेशानियों का सामना किया?' इसपर 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'हां' और 75 प्रतिशत ने 'नहीं' को अपने उत्तर के रूप में चुना। उत्तरदाताओं की इस प्रतिक्रिया के फलस्वरूप शोध में अनुमानित की गई पहली परिकल्पना एकदम गलत साबित होती है जिसमें यह कहा गया कि 'ऑनलाइन डेटिंग के लिए टिंडर असुरक्षित है', क्योंकि 75 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जिन्होंने टिंडर का इस्तेमाल करते समय कभी सुरक्षा संबंधी परेशानियों का सामना नहीं किया है।

अतः इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' का समाज पर विभिन्न प्रकार से प्रभाव पड़ रहा है जिसे सर्वेक्षण के द्वारा सामने लाने का कार्य किया गया है तथा विश्लेषित किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से उपयोगकर्ताओं के द्वारा ऐप का उपयोग किए जाने की प्रवृत्ति भी स्पष्ट रूप से परिणाम के तौर पर सामने आ रही है। साथ ही, आज के युवा किस प्रकार से टिंडर का उपयोग कर रहे हैं उसे भी यह सर्वेक्षण उभारने तथा उनके द्वारा इसका उपयोग किए जाने के पीछे व्याप्त कारणों को रेखांकित करने का कार्य कर रहा है। अतः विभिन्न आधारों पर यह स्पष्ट होता है कि यह शोध अपने तीनों निर्धारित शोध के उद्देश्यों को पूर्ण कर रहा है।

शोध-निष्कर्ष

संचार व्यवस्था का आधुनिकीकरण तथा डिजिटल मीडिया की चकाचौंध भले ही भूमंडलीकरण की देन हो लेकिन भारत की सामाजिकता पर इसके प्रभाव चौंकाने वाले हैं। समाज पर डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' के प्रभावों से होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या इस शोध में की गई है। साथ ही शोध से यह अनुभूति तीव्रता से हुई कि डेटिंग ऐप का युवाओं के मन मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता है तथा उससे समाज के कई सांस्कृतिक, नैतिक, मूल्यगत, व्यवहारगत परिणामों में बदलाव की बयार बहती है। कभी वह सकारात्मक है तो कभी नकारात्मक। इस शोध में उपयोग किए गए प्रश्नावली उपकरण से यह तथ्य सामने आए हैं। खासकर युवाओं पर संचार के इस सशक्त माध्यम के रूप में ऑनलाइन डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' के प्रभाव एवं परिणामों के साथ संपूर्ण समाजीकरण की विस्तृत व्याख्या भारत के संदर्भ में इस शोध के माध्यम से प्राप्त हुई है।

प्रश्नावली के वर्गीकृत प्रभावों का विश्लेषण :

- प्रस्तुत शोध में यह सामने आया है कि डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' पर महिलाओं की तुलना में पुरुषों की संख्या अधिक है। महिला उपयोगकर्ताओं की संख्या जहां एक चौथाई है वहीं पुरुष उपयोगकर्ताओं की संख्या लगभग 3 चौथाई। साथ ही अन्य आयुवर्ग के लोगों की तुलना में 18-21 आयुवर्ग के उपयोगकर्ता सबसे अधिक हैं और इसके बाद 22-25 आयुवर्ग के लगभग एक चौथाई युवा भी टिंडर का इस्तेमाल करते हैं। विशेष रूप से इसका व्यापक प्रभाव इस आयुवर्ग में देखा गया।

- प्रस्तुत शोध कार्य में टिंडर का उपयोग करने वाले अधिकतर युवाओं में यह पाया गया कि ये लोग दोस्त बनाने के उद्देश्य के साथ-साथ मजे के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं। इसके अलावा बात हुकअप की हो, अकेलापन मिटाने या सीरियस रिलेशनशिप की। सभी में इनकी रुचि देखने को मिलती है।
- प्रस्तुत शोध में यह बात सामने आई है कि कई लोग अपने मित्रों और सहयोगियों के कहने पर टिंडर पर आते हैं। इससे यह तथ्य उजागर होता है कि यह लोगों के जीवन पर इस प्रकार असर डाल रहा है कि टिंडर उपयोगकर्ता अपने मित्रों और सहयोगियों को टिंडर के इस्तेमाल के लिए प्रभावित कर रहे हैं।
- प्रस्तुत शोध कार्य में अधिकांश लोगों की प्राथमिकताओं में शादी करके घर बसाने की सोच के बजाय खुद के लिए जीने का नया चलन दिख रहा है। इसके अलावा शादी ही नहीं, पढ़ाई पूरी करना और आर्थिक सुरक्षा जैसे अहम पहलू भी उनकी प्राथमिकताओं से दूर जा रहे हैं। निजी स्वतंत्रता को ज़्यादा अहमियत देना, युवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव की ओर स्पष्ट रूप से संकेत करता है जो यह दर्शाता है कि सामाजिक-पारिवारिक परिवेश तथा सामाजिक दायित्वों से नई पीढ़ी की दूरियां बढ़ी हैं।
- प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि आधे से ज़्यादा उपयोगकर्ता अन्य किसी वक्त की अपेक्षा रात का समय टिंडर पर बिताना उपयुक्त मानते हैं। दिनभर के व्यस्त समय के उपरांत रात्रि का एकाकी समय टिंडर पर बिताना उन्हें मानसिक थकावट से राहत दिलाने का कार्य करता है। यह उनके मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभाव को रेखांकित करता है।

- प्रस्तुत शोधकार्य इस ओर प्रकाश डालता है कि अधिकांश लोगों का इस बात से इनकार करना कि ऑनलाइन डेटिंग करना उनकी पढ़ाई, करियर और निजी जिंदगी पर बुरा असर नहीं डालता है या उन्हें इस बात से फर्क ही नहीं पड़ता है, स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि यह ऐप लोगों के दिलों-दिमाग पर कितना गहरा प्रभाव डाल रहा है।
- प्रस्तुत शोध में अधिकतर लोगों का ये कहना कि उन्हें टिंडर के इस्तेमाल से कुछ फायदा नहीं हुआ। इसकी उपयोगिता पर कहीं न कहीं प्रश्न चिह्न तो लगाता है लेकिन वहीं कई लोगों का यह कहना कि इसके उपयोग से उनकी कम्युनिकेशन स्किल बढ़ी है, इसके महत्व को भी उजागर करता है। इस प्रकार समाज पर इसका व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध में यह स्पष्ट हुआ है कि तीन चौथाई लोग ऐसे हैं जिन्होंने टिंडर का इस्तेमाल करते समय कभी भी सुरक्षा संबंधी परेशानियों का सामना नहीं किया है लेकिन वहीं अधिकांश लोग टिंडर को ऑनलाइन डेटिंग के लिए एक सुरक्षित जगह मानने पर हामी भरने से परहेज़ करते हैं। इससे यह देखा जा सकता है कि ऑनलाइन डेटिंग का उपयोग करने के साथ-साथ व्यक्ति के मस्तिष्क में कहीं न कहीं इन साइट्स को लेकर अपनी निजता की रक्षा का संशय एवं डर बना रहता है।
- प्रस्तुत शोधकार्य से स्पष्ट है कि डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' का समाज पर पड़ने वाला प्रभाव तरह-तरह के रूपों में देखा जा सकता है जिनमें कुछ सकारात्मक है तो कुछ नकारात्मक। साथ ही, यह कहा जा सकता है कि ऑनलाइन डेटिंग की दुनिया में 'टिंडर' लगातार युवाओं के जीवन में अपनी जड़ें मजबूत कर रहा है।

शोध सीमाएं

किसी भी शोध को सफलता, कुशलता और अर्थपूर्ण संपादित करने के लिए शोध कार्य की सीमाओं का निर्धारण किया जाता है। प्रस्तुत शोध डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' के समाज पर पड़ने वाले प्रभावों को लेकर किया गया है। इसके अंतर्गत 100 लोगों का नमूना लिया गया और यह संख्या भारत जैसी विशाल जनसंख्या वाले देश का आकलन करने हेतु पर्याप्त नहीं है, इसलिए भविष्य में इन नमूनों की संख्या को जितना अधिक बढ़ाया जाएगा उतने सटीक परिणाम देखने को मिलेंगे। इसके अलावा इस शोध में केवल सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है, यदि इसमें अन्य विधियों का भी सहारा लिया जाएगा तो और अधिक बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। साथ ही यह शोध, प्रश्नावली उपकरण के माध्यम से संपन्न किया गया है, इसमें यदि अवलोकन, अनुसूची तथा साक्षात्कार इत्यादि विधियों का इस्तेमाल किया जाए तो यह और अधिक उपयोगी साबित होगा। अतः इन चीजों में सुधार कर इस शोध कार्य की गुणवत्ता को और अधिक बढ़ाया जा सकता है। इस शोध की एक सीमा यह भी थी कि ये बहुत ही नया विषय था, इसपर अभी बहुत ही कम कार्य हुआ है इसलिए साहित्य समीक्षा के लिए उपलब्ध सामग्री काफी सीमित थी।

संदर्भ सूची

[1] Michael Wayne (2011) Personal Connections in the Digital Age, by Baym, N. K., The Communication Review, 14:2, 149-151, doi: 10.1080/10714421.2011.573442

[2] Daily mail. (2018). “Tinder brief history”. Retrieved from https://www.dailymail.co.uk/sciencetech/fb-5396529/

[3] Tinder. “Tinder Webpage”. Retrieved from https://tinder.com/en

[4] M. Iqbal, “Tinder Revenue and Usage Statistics,” Business of Apps, March. 17, 2021. https://www.businessofapps.com/data/tinder-statistics/ (accessed March. 17, 2021).

[5] Razorpay. “The Era of Rising Fintech Report”. Retrieved July 10, 2020 from https://razorpay.com/blog/digital-payments-report-101-days-lockdown/

[6] L. Thompson, “‘I can be your tinder nightmare’: Harassment and misogyny in the online sexual marketplace,” Fem. Psychol., vol. 28, no. 1, pp. 69–89, 2018, doi: 10.1177/0959353517720226.

[7] Times of India. “Is modern dating lingo ghosting you”. Retrieved October 28, 2020 from https://m.timesofindia.com/life-style/relationships/love-sex/is-modern-dating-lingo-ghosting-you/amp_articleshow/78909474.cms

[8] R. Navarro, E. Larranaga, S. Yubero, and B. Villora, “Psychological correlates of ghosting and breadcrumbing experiences: A preliminary study among adults,” Int. J. Environ. Res. Public Health, vol. 17, no.3, 2020, doi: 10.3390/ijerph17031116.

परिशिष्ट : सर्वेक्षण के लिए प्रयोग की गई प्रश्नावली

क्या आप टिंडर का उपयोग करते हैं?

अगर इस प्रश्न का उत्तर हां है, तो कृपया मुझसे बात करिए।

मैं डेटिंग वेबसाइट 'टिंडर' के सामाजिक प्रभाव पर एक अध्ययन कर रहा हूं। यह मेरा निजी शैक्षिक शोध है जिसका किसी बाहरी संस्था से कोई संबंध नहीं है। इस अध्ययन का उद्देश्य टिंडर के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव (भारतीय संदर्भ में) को जानना है। जिसके लिए सर्वेक्षण हेतु मुझे टिंडर उपयोगकर्ताओं की आवश्यकता है।

इस शोध कार्य में आपके द्वारा दी जाने वाली सभी प्रतिक्रियाओं को गोपनीय रखा जाएगा तथा उन्हें केवल शोध प्रयोजनों के लिए ही उपयोग में लाया जाएगा। मैं आपकी प्रोफाइल फोटो अथवा नाम का कहीं भी उल्लेख नहीं करूंगा। इसके अलावा किसी भी कागज या इलेक्ट्रॉनिक डाटा में ऐसी कोई जानकारी शामिल नहीं होगी जिससे आपकी या किसी अन्य व्यक्ति की पहचान प्रकट होती हो। प्रतिभागियों द्वारा प्राप्त सभी प्रतिक्रियाएं (ऑनलाइन प्रश्नावली) एक व्यक्तिगत कंप्यूटर पर संग्रहित होंगे जो पासवर्ड द्वारा संरक्षित एवं एन्क्रिप्टेड होगा।

सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

धन्यवाद।

निखिल पवार

श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

आप मुझसे संपर्क कर सकते हैं : nikhil.pawar3795@gmail.com

1. लिंग

पुरुष	महिला	अन्य

2. उम्र

14-17	18-21	22-25	26-29	30 से ऊपर

3. आप कितने समय से टिंडर का इस्तेमाल कर रहे हैं?

कुछ ही महीनों से	एक साल से	काफी समय से

4. आप टिंडर का इस्तेमाल क्यों करते हैं?

मजे के लिए	दोस्त बनाने के लिए	हुकअप के लिए	अकेलापन मिटाने के लिए	सीरियस रिलेशनशिप के लिए

5. आप टिंडर पर कैसे आए?

सोशल मीडिया (इंस्टाग्राम, फेसबुक)	मित्रों और सहयोगियों द्वारा	अन्य कारणों से

6. आपकी प्राथमिकताएं क्या हैं?

खुद के लिए जीना	पढ़ाई पूरी करना	विश्व भ्रमण	आर्थिक सुरक्षा	शादी करके घर बसाना

7. आप टिंडर पर ज़्यादा सक्रिय किस समय होते हैं?

सुबह	दोपहर	शाम	रात	पूरे दिन

8. क्या ऑनलाइन डेटिंग के लिए टिंडर एक सुरक्षित जगह है?

हां	नहीं	कुछ कह नहीं सकते

9. क्या ऑनलाइन डेटिंग करना आपकी पढ़ाई, करियर और निजी जिंदगी पर बुरा असर डालता है?

हां	नहीं	फर्क नहीं पड़ता

10. टिंडर के इस्तेमाल से आपको क्या फायदा हुआ?

कम्युनिकेशन स्किल बढ़ी	सेक्सुअल ओरिएंटेशन का पता लगा	पार्टनर मिला	यौन इच्छाएं पूरी हुई	कुछ फायदा नहीं हुआ

11. क्या आपने कभी 'टिंडर प्लस' लिया है?

हां	नहीं	नहीं, लेकिन लेना चाहता/चाहती हूं।

12. क्या आपने कभी अपने दोस्तों, भाई-बहन आदि को टिंडर पर जाने के लिए प्रेरित किया है?

हां	नहीं

13. टिंडर का इस्तेमाल करते समय क्या आपने कभी सुरक्षा संबंधी परेशानियों का सामना किया?

हां	नहीं